इस लघु कृति 'ज्ञानवर्धन काव्य' में गुरुदेव ने आगम, आचरण और वैराग्य के साथ-साथ चारों अनुयोगों को गागर में सागर भरने सदृश बना दिया है। महापुरुषों आचार्यों, संत व सतियों के आचरण एवं उपकार से लेकर सिद्ध-क्षेत्र और अतिशय-क्षेत्रों का स्मरण कराकर अपनी सामायिक के लिए विशुद्ध बनाने और साधुओं को शुभोपयोग से शुद्धोपयोग तक की यात्रा में जाने के लिए एक पाथेय तैयार कर दिया है। यह कृति बड़ी ही वैराग्यप्रद एवं बहुत मार्मिक है।

आचार्य भगवन् श्री आर्जवसागर जी महामुनिराज ससंघ

WhatsApp | YouTube | Instagram

Website | Other

संघ से संबंधित किसी भी सूचनाओं एवं अन्य जानकारी के लिए जुड़ें

आर्जव वाणी जन जन की कल्याणी Aarjavvvani 9174843674

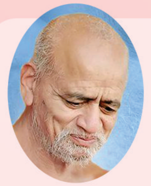

विशेष उपलब्धियां

धर्म प्रभावक

आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज

को उनके आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं मानवीय योगदान हेतु देश-विदेश की अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है।

मानद उपाधियाँ (Honorary Degrees)

1. Doctorate of Philosophy (D.Phil.)- *Chania International University, Greece.*
2. Doctorate of Literature (D.Litt.)- *America International University.*

विशेष सम्मान एवं पुरस्कार

3. अहिंसा के दूत
4. जैन धर्म के गौरव रत्न
5. अहिंसक प्रचारक
6. आध्यात्मिक संत
7. आहारौषध विज्ञान के ज्ञाता
8. साहित्यिक प्रतिभा
9. 20 वीं सदी के हिंदी साहित्य के सर्वोच्च शिखर
10. विश्व के भगवान
11. करुणा के सागर
12. अहिंसा के पुजारी
13. तमिल देश के उद्धारक संत
14. महावीर प्रतिमूर्ति
15. विद्या गुरु से दीक्षित बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य
16. बहुभाषाविद् आचार्य
17. वर्ल्ड गॉड
18. चारित्र शिरोमणि
19. भारत के दयालु संत
20. स्वर्ण भारत सम्मान
21. राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरस्कार
22. भारतीय रत्न अवार्ड
23. पद्म श्री गौरव सम्मान
24. भारत गौरव रत्न
25. भारत प्रतिभा सम्मान
26. नेशनल अवार्ड
27. प्रेरणा सम्मान
28. भारतीय उत्कृष्टता सम्मान
29. नव भारत सेवा रत्न सम्मान
30. ग्लोबल अचीवर्स अवार्ड
31. अंतर्राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार
32. समाज सेवा आदर्श रत्न पुरस्कार
33. विजीनरी लीडर अवार्ड
34. विजय रत्न सम्मान
35. विद्या रत्न सम्मान
36. पीएम मोदी विजन ऑफ भारत अवार्ड
37. श्रेष्ठ रत्न सम्मान
38. भारत स्वाभिमान अवॉर्ड
39. विजय गौरव सम्मान
40. स्टार ऑफ द ग्लोब अवॉर्ड
41. अखंड भारत सम्मान
42. राष्ट्रीय गौरव सम्मान
43. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय पुरुस्कार
44. एपीजे अब्दुल कलाम नेशनल अवार्ड
45. स्वामी विवेकानंद प्रेरणा सम्मान
46. डॉ. भीमराव अंबेडकर नेशनल अवार्ड
47. उज्जवल भारत पुरस्कार
48. इंडिया प्राइड इन एजुकेशन पुरस्कार
49. सद्भावना सेवा सम्मान
50. वर्ल्ड टैलेंट अवार्ड
51. ग्लोबल प्रतिष्ठित अवार्ड
52. इंटरनेशनल स्टार अवार्ड
53. राइजिंग भारत स्टार अवार्ड
54. लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड
55. द्रोपदी मुर्मू प्रेसिडेंशियल ऑनर फॉर सोशल जस्टिस
56. भारत के प्रभावशाली संत

अन्य प्रमुख सम्मान

- शिक्षा, समाज सेवा एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा अनेक अवसरों पर सम्मानित।
- विभिन्न देशों- युएसए, यूके,यूएन, लंदन, तमिलनाडु आदि में आध्यात्मिक साहित्यिक विधा की कला के माध्यम से उच्च स्तर पर सम्मानित।

विशेष टिप्पणी- आचार्यश्री का जीवन समर्पण, साधना और सेवा का अद्वितीय उदाहरण है। उनके द्वारा किए गए कार्य राष्ट्रीय समाज जन के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

ज्ञान-वर्धन काव्य एवं आर्जव वचनामृत

रचयिता
धर्म प्रभावक आचार्य श्री आर्जवसागर जी

आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का जीवन परिचय

पूर्व नाम : पारसचंद जैन
पिता एवं माता : श्री शिखरचंद जैन, श्रीमती मायाबाई जैन
जन्म : 11 सितम्बर 1967, फुटेरा कलां, जिला दमोह (मध्यप्रदेश)
शिक्षा : बी.ए., डिग्री कॉलेज, दमोह (मध्यप्रदेश)
ब्रह्मचर्य व्रत : 19 दिसम्बर 1984, अतिशय क्षेत्र, पनागर, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
क्षुल्लक दीक्षा : 8 नवंबर 1985, सिद्धक्षेत्र अहारजी, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)
ऐलक दीक्षा : 10 जुलाई 1987, अतिशय क्षेत्र थूबोन जी, अशोकनगर (मध्यप्रदेश)
मुनि दीक्षा : 31 मार्च 1988, महावीर जयंती, सिद्धक्षेत्र सोनागिरि जी, (मध्यप्रदेश)
दीक्षा गुरु : संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
आचार्य पद : 25 जनवरी 2015, इंदौर (समाधि पूर्व आचार्य श्री सीमंधरसागर जी महाराज द्वारा)

कृतियाँ एवं रचनाएँ

आचार्यश्री की साहित्य साधना अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायी है। उन्होंने दो दर्जन से अधिक कृतियों का सृजन किया है, जिनके माध्यम से आचार्य श्री ने जैन दर्शन के गूढ़ तत्त्वों को सरल और व्यवहारिक रूप में समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है।

1. आगम ग्रंथ- आगम अनुयोग भाग (1-2), जैनागम संस्कार (हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, तमिल, कन्नड़), आध्यात्मिक प्रवचन, पर्युषण पीयूष।

2. काव्य व शतक- तीर्थोदय काव्य, सदाचार सूक्ति काव्य, मोक्षप्रदायक काव्य (आत्मोद्धार शतक, सन्मार्ग प्रभावना काव्य, तीर्थंकर स्तुति शतक, सम्यक् ध्यान शतक, श्री अंतादि शतक, गुरु-गुण महिमा काव्य, आशीर्वाद शतक, धर्म भावना शतक, अध्यात्म समयोदय काव्य), ज्ञान वर्धन काव्य आदि।

3. पद्यानुवाद- पद्यानुवाद मंजरी (गोम्मटेश थुदी, भक्तामर स्तोत्र, द्रव्यसंग्रह, इष्टोपदेश, समाधितंत्र, वारसाणुवेक्खा, तत्त्वसार, प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)

4. अन्य विशेष- आर्जव कविताएँ, लोक कल्याण विधान, ॐ योग ध्यान, आर्जव वचनामृत आदि।

प्रवचन और प्रेरणाएँ- डॉ. आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज अपने ओजस्वी, तार्किक और हृदयस्पर्शी और आध्यात्मिक प्रवचनों के लिए प्रसिद्ध हैं। आपके प्रवचन चौदह प्रदेशों संबंधी अनेकों जेल, स्कूल, विश्वविद्यालय, आश्रम आदि अनेक संस्थानों में भी हुए हैं। आचार्य श्री का उपदेश समाज में नशामुक्ति, शाकाहार, नैतिकता, अहिंसा और शिक्षा के प्रसार का माध्यम बन चुका है। आचार्य श्री विशेष रूप से जनमानस को सम्यग्दृष्टि बनाकर संयम, सदाचार और आत्मानुशासन की ओर प्रेरित करते हैं।

आध्यात्मिक योगी, बहुभाषाविद्, 20 शिष्यों के दीक्षादाता आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का जीवन तप, त्याग, साधना और सेवा का आदर्श उदाहरण है। समाज में उनकी साधना के माध्यम से आध्यात्मिकता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों पर निरंतर प्रकाश फैल रहा है। गुरुदेव ने देश की संस्कृति की संपदा को उद्घाटित करते हुए कीर्तिमान स्थापित कर भारत देश को गौरवान्वित किया है।

प्रमुख विशेषताएँ

1. 'आर्जव' का साक्षात् स्वरूप
2. ज्ञान और व्यवहार का अद्भुत संतुलन
3. साहित्य सृजन में विशेष रुचि
4. अनुशासन और संयम की प्रतिमूर्ति
5. प्रभावशाली प्रवचन शैली
6. युवाओं के प्रेरणास्रोत
7. धर्मप्रभावना में निरंतर सक्रियता
8. गुरु परंपरा के प्रति गहन श्रद्धा

ज्ञान-वर्धन काव्य
एवं
आर्जव वचनामृत

रचयिता

धर्म प्रभावक आचार्य श्री आर्जवसागर जी

ज्ञान-वर्धन काव्य
एवं
आर्जव वचनामृत

कृतिकार - **आचार्य श्री आर्जवसागर जी**

संस्करण - **प्रथम, 2026**

प्रतियां - **1000**

पावन-संदर्भ - **आचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का 39 वाँ मुनि दीक्षा दिवस, महावीर जयंती 2026, उदयपुर (राज.)**

पुण्यार्जक - स्वर्गीय पदम चंद जी जैन की स्मृति में ...
बादाम बाई (धर्म पत्नी) संजय - अनीता , मिथुन - सुनीता , टीकम - कविता जैन (मित्तल)एवं समस्त मित्तल परिवार रामगंजमंडी

Website -www.aarjavvani.com (pdf हेतु)

प्राप्ति-स्थान - आर्जव-तीर्थ एवं जीव-संरक्षण-ट्रस्ट
मो. : 7049004653, 9425011357, 9425601161, 9425601832

मुद्रक - **पारस प्रिन्टर्स (पवन जैन)**
207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल
फोन : 0755-4260034, 9826240876

विषय सूचि

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	आचार्यों का उपकार	iv
2.	ज्ञान-वर्धन काव्य	1
3.	आर्जव वचनामृत	12
4.	गुरु-सन्निधि	49
5.	गुरु-गुणानुवाद	51
6.	गुरु-समर्पण-शतक	58
7.	गुरु-उपकार-शतक	68
8.	भावनाष्टक	78
9.	सिद्धाष्टक	79

आचार्यों का उपकार

संतों, पूज्य आचार्य भगवन्तों की कृपा से ही आज धर्म-संस्कृति जीवंत है। यदि संत न होते तो आज जो कुछ भी धार्मिकता शेष रह गई है वह भी नहीं होती। गुरुओं की कृपा बड़ी निराली होती है। उन्हीं परम उपकारी पूज्य आचार्य भगवन्तों की शृंखला में अध्यात्म योगी, ब्रह्माण्ड के देवता, राष्ट्रहित चिंतक, वात्सल्यमूर्ति आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज हैं; जो अपनी आकर्षक, धारा-प्रवाह, सरल-सुबोध शैली में अमृतमयी वाणी के माध्यम से अध्यात्मघट का अमृत रस हम सभी पर बरसाते हैं।

उनकी करुणा, प्राणी मात्र के प्रति दया और सौहार्दता अपने आप में अनुपम व अनूठी है। जो उन्हें आज आचार्यत्व के उत्तुङ्ग शिखर पर ले गई है। आपका अनुपम व्यक्तित्व चुंबक की भाँति सबको अपनी ओर खींच लेता है तथा आपकी उपकारी दिव्य देशना तीर्थंकर की वाणी से कम नहीं होती।

ऐसे पूज्य उपकारी आचार्य भगवन्त के महान उपकारों को यह दुनिया युगों-युगों तक गायेगी और आपके बताये सुमार्ग पर चलकर भव बंधन से मुक्ति अवश्य पायेगी।

इस लघु कृति 'ज्ञानवर्धन काव्य' में गुरुदेव ने आगम, आचरण और वैराग्य के साथ-साथ चारों अनुयोगों को गागर में सागर भरने सदृश बना दिया है। महापुरुषों आचार्यों, संत व सतियों के आचरण एवं उपकार से लेकर सिद्ध-क्षेत्र और अतिशय-क्षेत्रों का स्मरण कराकर अपनी सामायिक के लिए विशुद्ध बनाने और साधुओं को शुभोपयोग से शुद्धोपयोग तक की यात्रा में जाने के लिए एक पाथेय तैयार कर दिया है।

बस इस कृति को सामने रखकर ध्यान करने की जरूरत है। फिर तो आनंद ही आनंद में डूबते चले जायेंगे और अपने लक्ष्य सिद्धत्व को एक दिन अवश्य पायेंगे। ऐसे काव्य की और कृतिकार गुरुदेव के उपकार की महिमा अंत में हमने अपनी कविता एवं शतक में गाने का अल्प प्रयास किया है जिसे भी आप अवश्य पढ़ेंगे। अपनी बात का उपसंहार करते हुए ऐसे सदुपकारी गुरुदेव के चरणों में शत शत नमन-वंदन। गुरु चरणों में कुछ पंक्तियाँ-

पुण्योदय से गुरु मिले, आर्जवसागर संत।
'ऋषिका' जीवन धन्य हो, गुरु रहें जयवंत॥

तीर्थंकर सम बन गुरु, बनें शीघ्र भगवान।
'ऋषिका' की शुभ भावना, मिले चरण में थान॥

गुरुवर गुण के धाम हैं, मुझमें न कुछ ज्ञान।
श्रद्धा भक्ति से भरी, गाऊँ तव गुणगान॥

हम सबकी हर श्वास में, हो गुरुवर का नाम।
गुरुवर के गुणगान को, गाऊँ आठों याम॥

आर्जव गुरु के चरण में, नत हो बारंबार।
गुरुवर का गुणगान कर, मिले शीघ्र शिवद्वार॥

ज्ञान ध्यान में लीन नित, जिनशासन की शान।
गुरु गुण के भण्डार हैं, आर्जव गुरु महान॥

सूरीश्वर की अर्चना, प्रणाम सौ-सौ बार।
विद्यार्जव गुरु की शरण, करती भव से पार॥

-बहिन ऋषिका जैन, दमोह
(B.E., M.A., Ph.D. संलग्न)

ज्ञान-वर्धन काव्य

-आचार्य श्री आर्जवसागर जी

देव-शास्त्र-गुरु वंदन

परमेष्ठी को नमन हमारा।
जिनसे मिलता सम-सुख सारा॥ 1॥

जिनवाणी कल्याणी प्यारी।
भव्यों के सब संकट हारी॥ 2॥

गुरुओं का उपकार बड़ा है।
श्रुत-ग्रन्थों को यहाँ रचा है॥ 3॥

ज्ञान की महिमा

ज्ञान बढ़े समता वह लाता।
सहन-शीलता खूब बढ़ाता॥ 4॥

अक्ष-विषय विस्मृत हो जाते।
ज्ञान-विषय में गहरे जाते॥ 5॥

श्रुत-मंथन नवनीत मिला है।
हृदय-बीच सम-सौख्य खिला है॥ 6॥

महिमा ज्ञान की अपरंपार।
पाठ-पठन का जो संस्कार॥ 7॥

ज्ञान आचरण में ढलता जब।
ज्ञान का सच्चा फल मिलता तब॥ 8॥

आगम-ज्ञान दे, त्याग-भावना।
त्याग-भाव से हो प्रभावना॥ 9॥

आगम-मय मुनि-चर्या भाती।
तीर्थ-भावना धर्म बढ़ाती॥ 10॥

आगम–ज्ञान से धर्म–वृद्धि हो।
धर्म–वृद्धि से सुख–समृद्धि हो॥ 11॥
स्वाध्याय शुभ, नियमित होना।
समय व्यर्थ न जग में खोना॥ 12॥
पुण्य–पाप का ज्ञान जहाँ हो।
ग्रहण–त्याग का भाव वहाँ हो॥ 13॥
व्यसन–त्याग का ज्ञान रहे जब।
न दुर्गति का, नाम रहे तब॥ 14॥
बिना ज्ञान के जीवन खारा।
ज्ञानी; ज्ञान से जग में प्यारा॥ 15॥
चारित शोभा ज्ञान बढ़ाता।
ज्ञान सफल, जब चारित भाता॥ 16॥
ज्ञानी पाता आदर जग में।
नहीं भटकता ज्ञानी मग में॥ 17॥
लोभ बिना, जग ज्ञान शोभता।
शोभित ज्ञानी, नहीं लोभता॥ 18॥
ज्ञान बढ़ाता व्रत–सुशीलता।
ज्ञान ही लाता सहज, धीरता॥ 19॥
सम–दर्शन का ज्ञान जहाँ हो।
सुर–नर भव पा मोक्ष वहाँ हो॥ 20॥
ज्ञानी दुःख में समता रखता।
अज्ञानी दुःख भोगी रहता॥ 21॥
सत्पुरुषों का ज्ञान सदा ही।
बोधि, समाधि देय वहाँ ही॥ 22॥

व्रत-चारित-सह नियम ज्ञान जहँ।
देव-गति-सम्मान मिले तहँ ॥ 23 ॥

तीन-लोक का ज्ञान जहाँ हो।
संवेगी बन जाय वहाँ वो ॥ 24 ॥

भू-वलय का जहाँ ज्ञान हो।
त्रि-लोकज्ञ, ज्योतिवान हो ॥ 25 ॥

कर्म-बंध का ज्ञान करे जो।
कर्म-उदय में नहीं डरे वो ॥ 26 ॥

द्रव्य, तत्त्व का ज्ञान है भाता।
सहन-शीलता समता लाता ॥ 27 ॥

ध्यान-ज्ञान से शान्त मनस् हो।
शमन कषायें रात दिवस हों ॥ 28 ॥

अनेकान्त का ज्ञान मिले जब।
जाय दुराग्रह, श्रद्धा हो तब ॥ 29 ॥

स्याद्वाद की ज्ञानी आतम।
एकान्तादि मिटता है तम ॥ 30 ॥

ज्ञान सम्पदा रहे जहाँ पर।
सदा निडरता रहे वहाँ पर ॥ 31 ॥

अमूल्य ज्ञान-धन सफल वहीं है।
जहाँ नियम-यम ध्यान सही है ॥ 32 ॥

'भग' का अर्थ ज्ञान है होता।
ज्ञानवान भगवान कहाता ॥ 33 ॥

ज्ञान बिना न राह है पाता।
मिले ज्ञान मंजिल पा जाता ॥ 34 ॥

•••

गुरु-महिमा

जिनवाणी के चिन्तवन से शुभ-, अंतरंग पट खुल जाते।
सद्‌गुरु मिलते, व्रत-संयम से, जीवन बगिया महकाते॥ 35॥

•••

गुरुचरणों में सेवा से नित, संस्कार बौछार मिले।
पुण्य बढ़े हो कर्म निर्जरा, अनुभव की सौगात खिले॥ 36॥

•••

गुरु न मिलते जीवन का वह, सुमन ही मुरझाया लगता।
नहीं मिले उपदेश गुरु का, अंधकार छाया लगता॥ 37॥

•••

गुरु-वाणी से हम भव्यों के, हृदय कमल खिल जाते हैं।
गुरु-प्रसन्नता आशी पाकर, हों मंगल सुख लाते हैं॥ 38॥

•••

महान आत्माएँ

ऋषभ-वीर ने अनेकान्त का।
ज्ञान जगाया धर्म-पन्थ का॥ 39॥

मारीचि ने कुधर्म चलाया।
भटका; अन्त-वीर पद पाया॥ 40॥

गणधर प्रभु ने दिये ग्रन्थ हैं।
पालें गृहि, निर्ग्रन्थ सन्त हैं॥ 41॥

बाहुबली का तप महान था।
एक वर्ष उपवास ध्यान था॥ 42॥

भरत-चक्री बन मुनि वैरागी।
ज्ञान-ज्योति फिर क्षण में जागी॥ 43॥

राम ने न्यायिक युद्ध किया था।
शील बचाया नियम लिया था॥ 44॥

महाबली हनुमान वीर थे।
त्याग राज्य, पा सिद्ध धीर थे॥ 45॥

बाध्य शेरनी, दिखा हि कौशल।
उपसर्ग विजयी रहे सुकौशल॥ 46॥

सुकुमाल की सहन-शीलता।
बैरी सियारनी, फिर भी धीरता॥ 47॥

पाण्डवों का तन जला, ध्यान में।
-लीन रहे थे तत्त्व-ज्ञान में॥ 48॥

गजकुमार वे अग्नि में जल।
समता के-सह मन था निर्मल॥ 49॥

वारिषेण पर असि प्रहार भी।
हुआ सु-अतिशय बना हार भी॥ 50॥

बने सुदर्शन जिनवर प्यारे।
विजय पायी बाधकतम, न्यारे॥ 51॥

श्रीपाल की बड़ी तपस्या।
संयम तप की मिलती शिक्षा॥ 52॥

महान सतियाँ

मैनासुन्दरी भक्ति जगत में।
बनी उदाहरण आत्म सुहित में॥ 53॥

अनंगसरा की शक्ति बड़ी थी।
अजगर बाधा सहन सही थी॥ 54॥

सीता सति ने शील बचाया।
बनी आर्यिका सुर-पद पाया॥ 55॥

अनन्त मति की दृढ़ता उत्तम।
शील परीक्षा दी सर्वोत्तम॥ 56॥

रानी रेवती सम-दर्शी थी।
मुनि-भक्ति में कुशल रही थी॥ 57॥

रानी चेलना दुःख-हारक थी।
श्रेणिक नृप की उद्धारक थी॥ 58॥

सदा अठाई रहे निर्जला।
प्रभावना में ख्यात उर्विला॥ 59॥

चन्दनबाला सुशील नारी।
वीर-भक्ति में अतिशयकारी॥ 60॥

महान-श्रमण व ग्रन्थ

श्रुतकेवली भद्रबाहु थे।
द्वादशाङ्ग के ज्ञानवान थे॥ 61॥

ग्यारह अंग व दस पूर्वी जो।
ज्ञाता विशाखाचार्य रहे वो॥ 62॥

कषाय पाहुड़-लेखक न्यारे।
थे गुणधराचार्य वे प्यारे॥ 63॥

एक अंग के भाग ज्ञान था।
धरसेन आचार्य नाम था॥ 64॥

पुष्पदन्त भूतबली जहाँ थे।
षड्खण्डागम रचे वहाँ थे॥ 65॥

कषाय पाहुड़ में रहे रचयिता।
यतिवृषभ चूर्णि सूत्र चहेता॥ 66॥

कुन्दकुन्द ने सिद्धांतागम।
रचे हि पाहुड़ जो परमागम॥ 67॥

वट्टकेर मूलाचार रचयिता।
मूलगुणों के रहे सृजेता॥ 68॥

कार्तिकेय अनुप्रेक्षा प्यारी।
सब अनुप्रेक्षाओं से न्यारी॥ 69॥

उमास्वामि ने सूत्र ग्रन्थ को।
तत्त्व दिया हि निर्ग्रन्थों को॥ 70॥

समन्तभद्र ने रत्नत्रय-मय।
आगम शोभा भरी ग्रन्थ-मय॥ 71॥

पूज्यपाद ने रची भक्तियाँ।
सिद्धान्तों की भरी शक्तियाँ॥ 72॥

मानतुङ्ग की शक्ति प्यारी।
भक्तामर की महिमा न्यारी॥ 73॥

अकलंक देव के वार्तिक गाते।
लक्षण और न्याय से भाते॥ 74॥

वीरसेन के ग्रन्थ धवल हैं।
रचे हि प्राकृत बहु-उज्जवल हैं॥ 75॥

तीर्थंकर-गुण सहस्र नाम है।
जिनसेन रचि, सुखद धाम है॥ 76॥

देवसेन का तत्त्वसार है।
आत्मतत्त्व का भरा सार है॥ 77॥

अमितगति की द्वात्रिंशतिका।
ध्यान लाभ हो शुभ सन्मति का॥ 78॥

गोम्मटसार में जीव, कर्म का।
नेमिचन्द्र रचि सार धर्म का॥ 79॥

दिया पुराण, आत्मानुशासन।
भरा गुणभद्र ने शासन॥ 80॥

शुभचन्द्र ने भर दी गागर।
ज्ञानार्णव में ज्ञान का सागर॥ 81॥

अमृतचन्द्र ने अमृत जल-सा।
दिया समयसार का कलशा॥ 82॥

जयसेन ने टीकाएँ दीं।
कुन्दकुन्द की गाथायें थी॥ 83॥

ज्ञान सूरि की किरण मिली थी।
वीरोदय कृति उदित हुई थी॥ 84॥

विद्या सूरि की महिमा न्यारी।
कृतियाँ श्रमणशतकादि प्यारीं॥ 85॥

तीर्थोदयादि काव्य से जन को।
आर्जव-ज्ञान मिले हर मन को॥ 86॥

क्षेत्र-महिमा

कैलास-अष्टापद है न्यारा।
ऋषभदेव ने शिव पद धारा॥ 87॥

सम्मेदाचल बीस तीर्थ जिन।
मुक्त हुए हैं, अनन्त भी जिन॥ 88॥

चम्पापुर-मंदारगिरि शुभ।
धो देती है कर्म शुभाशुभ॥ 89॥

ऊर्जयन्त गिरनार पूज्य है।
नेमिनाथ निर्वाण पूज्य है॥ 90॥

पावापुरी की महिमा न्यारी।
वीर-मोक्ष, नत दुनिया सारी॥ 91॥

पोदनपुर का नाम बड़ा है।
बाहुबली शुभ मोक्ष लहा है॥ 92॥

मांगी-तुंगी मोक्ष स्थल है।
राम, हनु का तप उज्जवल है॥ 93॥
गजकुमार ने गजपन्था से।
मोक्ष सु पाया जिन पन्था से॥ 94॥
कुन्थलगिरि से शिव पद पाया।
कुल व देशभूषण जिन ध्याया॥ 95॥
सिद्धकूट से सिद्ध हुए हैं।
चक्री आदि मुनि शुद्ध हुए हैं॥ 96॥
कुण्डलगिरि की महिमा गाते।
सिद्ध हुए श्रीधर को ध्याते॥ 97॥
नंगा-नंग कुमार मुनीश्वर।
सोनागिरि शिव बने जिनेश्वर॥ 98॥
बहुत गुफायें जहँ तारंगा।
ध्यान करें मुनि मन हो चंगा॥ 99॥
अहार क्षेत्र पर मदनकुमार ने।
ध्यान किया था शिवं धारने॥ 100॥
गोपाचल सुप्रतिष्ठ केवली।
ध्यान किया, शिव-सिद्धि पा ली॥ 101॥
शत्रुञ्जय से पाण्डव मुनिवर।
सिद्धि-पा जय बन गये जिनवर॥ 102॥
बड़वानी से सिद्ध हुए हैं।
रावण सुतादि मुक्त हुए हैं॥ 103॥
द्रोणागिरि से मुक्ति पायी।
गुरुदत्तादि-समता भायी॥ 104॥

मुक्तागिरि मुनि मुक्त हुए हैं।
कोटि–कोटि, गुण युक्त हुए हैं॥ 105॥

नैनागिरि से मुक्ति पायी।
वरदत्तादि शरण सुहायी॥ 106॥

मुनि सुदर्शन ध्यान महा था।
पटना नगरी मोक्ष लहा था॥ 107॥

क्षेत्र गुणावा और नवादा।
गौतम गणधर शिवपद साधा॥ 108॥

हस्तिनागपुर प्रथम जिनेश्वर।
लिया श्रेयांस ने आहार अवसर॥ 109॥

मथुरा नगरी जम्बू–स्वामी।
ध्यान किया जिन, शिवपुर गामी॥ 110॥

बना बनारस कल्याणक थल।
अनेक तीर्थ जिन आराधन थल॥ 111॥

महावीर का अतिशय कहिए।
महावीर जी दर्शन लहिए॥ 112॥

मम विद्या गुरुवर, सिद्धोदय।
नेमावर में, नव क्षेत्रोदय॥ 113॥

अक्षय अंक

नव का अंक अक्षय कहलाता।
गुणें ज्ञान–वर्धन करवाता॥ 114॥

मंगल भावना

सूरि गुणों के गुण को गायें।
श्री हूँ से ज्ञान बढ़ायें॥ 115॥

आर्जवमय जो सरल स्वभावी।
सागर गुण के बने प्रभावी॥ 116॥
रचित होय जो कर्त्तव्यों में।
ज्ञान-वर्धन हो सु-सूक्तियों में॥ 117॥
काव्य गुणों का गहना पहने।
पढ़ना श्रुत, हो चारित गहने॥ 118॥
तथा चरित जब गहने सम हो।
अपना जीवन सुखमय तब हो॥ 119॥
जीवन अध्यातम-मय जब हो।
महान आत्मलीनता तब हो॥ 120॥
करना स्व-पर हित-मय जीवन।
ही से भी की यात्रा पावन॥ 121॥
मम निज को जब मोक्ष मिलेगा।
लक्ष्य है पूरा-मिला लगेगा॥ 122॥

प्रशस्ति

वीर निर्वाण पच्चीस सौ इक्यावन।
कार्तिक कृष्णा ग्यारस पावन॥ 123॥
उदय नगर इन्दौर सु-पावन।
ज्ञान-वर्धन काव्य सु-भावन॥ 124॥

दोहा

ज्ञान हि वर्धन हो सदा, सम्यक् चारित भाय।
‘**आर्जव**’-मय उपयोग से, आत्म सुखी हो जाय॥ 125॥

कार्तिक कृष्णा ग्यारस
उदयनगर, इंदौर 23/10/2025

आर्जव वचनामृत

1. बिना आत्मा की पवित्रता के अतिशय संभव नहीं।

   Without the presence of the soul, the manifestation of spiritual excellence is not possible.

•••

2. याद रखना....धर्मात्मा से कभी ग्लानि मत करना। क्योंकि धर्मात्मा के बिना धर्म नहीं होता।

   Do not look for faults in devotees, because devotion keeps religion alive.

•••

3. रत्नत्रय के तेज की प्रभावना; सबसे बड़ी प्रभावना है।

   The influence and the spreading of the radiance of the Three Jewels (Ratnatraya) is the greatest glory.

•••

4. धर्मध्यान में निश्चिंतता, निराकुलता जरूरी है।

   Peace of mind and a state of freedom from all anxieties are essential requirements in righteous meditation.

•••

5. विशुद्धि को बढ़ाना है तो सद्धर्म पर श्रद्धान करो।

   If you truly wish to increase your inner purity, then place your firm faith and belief in the true religion.

•••

6. भाग्य को जगाना है तो धर्म और मोक्ष का पुरुषार्थ करो।

   If you want to shape and brighten your fortune, then put your greatest effort into the path of religion and liberation.

•••

7. मन को चंचल नहीं अविचल बनाओ।

   Do not allow the mind to remain restless; instead,

make it unwavering, steady, and focused.

•••

8. रत्नत्रय की प्राप्ति भव्य को होती है; अभव्य को नहीं।

The attainment of the Three Jewels is possible for the worthy soul, but it is not possible for the unworthy soul.

•••

9. विशिष्ट पुण्य का अर्जन करना हो तो वीतराग के सेवक बनो।

If you wish to earn and accumulate extraordinary merit, then become a humble servant of the Detached Lord.

•••

10. पापों के क्षय के लिये पापों के त्यागी की पूजा करो।

For the sake of destroying your past sins, offer your service to those who have completely renounced all sins.

•••

11. ध्यान रखना.... जन्म से नहीं कर्म से पूज्य बनते हैं।

Always keep in mind that one does not become worshipful by birth, but becomes worshipful through their own deeds.

•••

12. पूजा किये बिना कोई पूज्य नहीं बनता।

No one in this world becomes worthy of worship without first completing their spiritual task.

•••

13. बिना मुनि बने कोई निश्चय की प्राप्ति नहीं कर सकता।

Without entering the holy state of a monk, one cannot achieve the ultimate certainty of the soul.

•••

14. खोजना है तो... पुण्य को बढ़ाने का और कर्मों को खपाने का मार्ग

खोजो।

If you feel the need to search... then search for the path that increases your merit and reduces your shortcomings.

•••

15. शरीर की नहीं; आत्मा की सुंदरता महत्वपूर्ण है।

It is not the external beauty of the physical body that matters; the inner beauty of the soul is what is truly important.

•••

16. जीवन का सही उपयोग करना है तो जीवन को संयम में लगा दो।

If you want to make the correct and most fruitful use of your life, then dedicate your life to the path of self-restraint.

•••

17. ध्यान रखना... ध्यान किये बिना कर्मों का क्षय नहीं होता।

Always remember... without the practice of meditation, the destruction of accumulated karmas can never happen.

•••

18. कर्मों के क्षय हेतु तपस्या जरूरी है।

Spiritual penance and austerity are absolutely necessary for the shedding and removal of karmas.

•••

19. परिग्रह के त्याग के बिना महाव्रती नहीं बनते।

Without the total renunciation of worldly possessions, one cannot truly become a taker of the Great Vows.

•••

20. क्रोध की अधिकता मान कषाय का उदाहरण है।

To have an excess of anger in your nature is a clear

example of the internal passion of pride.

•••

21. निःस्वार्थी कभी चापलूसी नहीं करता। वह तो सत्पत्रों की कर्म क्षयार्थ वैयावृत्त करता है।

A person who is truly selfless never resorts to flattery; he serves only for the purpose of destroying the karmas of worthy souls.

•••

22. अभेद भाव रख प्राणी मात्र की रक्षा व सेवा; चापलूसी नहीं कर्त्तव्य-निष्ठता है।

Having a feeling of non-duality and protecting all living beings is not flattery, but a deep sense of spiritual duty.

•••

23. कृतघ्न नहीं, बफेदार बन प्रत्युपकार करो। जो दूसरों पर हँसता है उस पर सारी दुनियाँ हँसती है।

Do not mock or make fun of anyone; the entire world eventually laughs at the one who laughs at others.

•••

24. तामसिक वृत्ति क्रूरता को जन्म देती है।

Possessing a cruel mentality or a harsh way of thinking only gives birth to further cruelty in the world.

•••

25. झुके हुये वृक्ष-सम नम्र बनो, जिसमें सद्गति और सुख रूपी फल लग सकें।

Be humble and modest like a tree laden with fruit; it is upon such humility that the fruits of a good rebirth and virtues grow.

•••

26. गम्भीरता और सीमित प्रवृत्ति बड़प्पन की पहचान है।

Maintaining a sense of seriousness and limiting one's worldly activities are the true signs of a great soul.

•••

27. शील रूपी घृत की रक्षा हेतु परस्त्री/परपुरुष के संपर्क रूपी अग्नि से दूरी बनाकर रखें।

To protect the sacred nectar of your character, always keep a safe distance from the fire of contact with the opposite gender.

•••

28. दान पूजादि कार्यों में समुद्र के समान पुण्य मिलता है।

In performing holy activities like the worship of the Jina, one obtains a treasure of merit as vast as the ocean.

•••

29. जो सद्गुरु के सन्मार्ग पर चलता है तो उसकी सर्व सिद्धियाँ द्वार खोले प्रतीक्षा करती हैं।

For the person who walks faithfully on the path shown by the True Guru, all spiritual attainments wait with open doors.

•••

30. गुरु से हठ करना मतलब विनय तप को नष्ट करना है।

To engage in arguments with the Guru means to destroy the great spiritual penance of practicing humility.

•••

31. गुरु को खुश करना मतलब सुख शांति रूप उत्तम सुख को प्राप्त करना है।

To keep the Guru pleased through your right conduct means to attain the supreme happiness of inner peace.

•••

32. गुरुवर का आशीष ही सफलता की सही सौगात है।

Receiving the divine blessing of the Guru is the most authentic and true gift of success in one's life.

•••

33. गुरु की निःस्वार्थ सेवा ही पुण्य का खजाना भर तीर्थंकर पद को दिलाने वाली होती है।

Performing selfless service to the Guru fills the treasury of merit and can even lead a soul to the status of a Tirthankara.

•••

34. विषय भोगों के साथ आध्यात्मिक योग का स्वाद दुर्लभ है।

The true taste of spiritual union and meditation is very rare for those who are still immersed in sensual pleasures.

•••

35. बाहरी ध्यान से चित्त का हटना ही आत्मिक ध्यान से जुड़ना है।

The act of withdrawing the mind from external objects is, in itself, the true connection to spiritual meditation.

•••

36. चित्त की स्थिरता; आत्मा और परमात्मा के चिंतन से आती है।

The stability and stillness of the mind come only from contemplating the nature of the Soul and the Supreme Soul.

•••

37. अधिक बोलने वालों की शक्ति व्यर्थ हो जाती है।

The vital energy and spiritual strength of those who speak too much is wasted and lost in vain.

•••

38. बेफालतू घूमना व्यसनाशक्ति और निर्लज्जता का कारण है।

Wandering here and there aimlessly is a primary

cause for falling into addictions and losing one's sense of shame.

•••

39. मात्र किताबी अध्ययन ही ज्ञान नहीं; अपनी चर्या में निखरता आना ही सही ज्ञान है।

Simply reading books is not true knowledge; the refinement and purity that appears in your daily conduct is true knowledge.

•••

40. पर नारी को नम्र दृष्टि रख; माँ, बहिन के समान देखना चाहिए।

One should always look at others with a pure vision, seeing them with the respect due to a mother, sister, or brother.

•••

41. धन कमाई हेतु नारी को; परपुरुषों के घर भेजना शील को जोखिम में डालना है।

Sending a woman to the houses of other men for the sake of earning money puts her sacred character at great risk.

•••

42. व्यर्थ और अप्रयोजनीय कार्य से बचने के लिये बोलने से पहले वचनों को तौलना चाहिए।

To avoid falling into useless and purposeless work, a person should always weigh their words carefully before speaking.

•••

43. धन का अति लोभ, व्यक्ति के रक्त के सम्बन्धियों में भी दरार पैदा कर भेद रूप दीवार तक खड़ी कर देता है।

Excessive greed for accumulating wealth creates deep cracks even among blood relatives and stands like a wall of division.

•••

44. अधिक मनवार की चाहना मान कषाय को बढ़ाती है।

The inner desire for receiving excessive hospitality and honor only serves to increase one's internal passions.

•••

45. आध्यात्मिक जीवन बनाने के लिये शरीर की शोभा को विराम देना आवश्यक है।

To build a truly spiritual life, it is necessary to give rest to the ego and the vanity regarding the physical body.

•••

46. जीवन की सादगी में आध्यात्म के पुण्य दल खिलते हैं।

The beautiful flowers of spiritual merit bloom only in the soil of a simple and uncomplicated life.

•••

47. विश्वस्त मार्ग पर चलने से कदमों में लड़खड़ाहट नहीं होती।

There is no danger of stumbling or falling when you are walking on the well-trodden path of the wise and the holy.

•••

48. गुरु पर क्रोध करना मतलब जन्म-जन्मान्तरों के पुण्य को नष्ट कर दुर्गति के द्वार खोलना है।

To harbor doubt toward the Guru means to waste the merit of many past births and open the doors to a miserable state.

•••

49. गुरु का दण्ड उदण्डता को भगा देता है।

Accepting the punishment or correction given by the Guru is what successfully drives away one's insolence.

•••

50. गुरु के द्वारा दी गई सजा उन्नति के मजा के लिये होती है।

Any punishment or discipline given by the Guru is intended only for the joy of your own spiritual progress.

•••

51. एक स्वच्छ हृदय वाला मौनी शताधिकों को हरा देता है।

A person who possesses a clean and transparent heart has the strength to defeat hundreds of opponents.

•••

52. कम और आवश्यक बोलना ही एक धर्मात्मा की पहचान है।

Speaking very little and speaking only what is absolutely necessary is the true identity of a religious soul.

•••

53. कम बोलने में आत्मशक्ति कायम रहती है।

One's internal spiritual power remains intact and strong by practicing silence and speaking as little as possible.

•••

54. जगत की सारी सिद्धियों का महल ब्रह्मचर्य की शिला पर टिका हुआ है।

The grand palace of all the world's spiritual attainments rests firmly on the foundation rock of celibacy.

•••

55. परम–लक्ष्य को बनाये बिना कदम बढ़ाना पागल–पन की पहचान है।

Increasing the speed of your steps without having a supreme goal in your mind is nothing but a sign of madness.

56. संतति को जन्म देना बुरा नहीं बल्कि उन्हें धर्म संस्कार के बिना रखना संकट का कारण है।

Giving birth to children is not in itself bad, but raising

them without religious values and ethics is a cause of future crisis.

•••

57. स्वावलंबी जीवन स्वाश्रित होकर जी सकते हैं न कि पराश्रित होकर।

A life of true self-reliance can only be lived by being dependent on your own self, rather than relying on others.

•••

58. पराधीनता का सुख वास्तविक व स्थायी नहीं बल्कि दुःख रूप, झूठा और क्षणिक होता है।

The happiness found in being dependent on others is not real or permanent; it is a form of sorrow, it is false, and it is momentary.

•••

59. सद्‌गुरुओं की पूर्ण विनय व्यक्ति को शीघ्र ही गुरु जैसा बना देती है।

Practicing complete and total humility toward the True Gurus will soon make a person become like the Guru himself.

•••

60. गुरुओं की अवज्ञा व्यक्ति को यातनाओं के गर्त में डाल देती है।

Showing disrespect to the holy Gurus throws a soul into the deep abyss of unending spiritual agony.

•••

61. गुरुओं को खुश रखना ही सच्ची सेवा है।

Keeping the holy Gurus happy through your right conduct and devotion is the true essence of spiritual service.

•••

62. मार्ग में हिचकिचाने वाला मंजिल और मार्ग की श्रद्धा में दृढ़ता रखने वाला नहीं होता।

A person who hesitates while walking on the path does not yet have firm faith in either the destination or the way.

•••

63. मार्ग और मंजिल की दृढ़ श्रद्धा व्यक्ति को मार्ग पर वेहिचक चलाती जाती है।

Having a firm and unshakeable faith in the path and the destination takes a person forward without any hesitation.

•••

64. किसी धर्मात्मा के द्वारा कुछ देने या न देने पर भी सबकुछ देने के समान है क्योंकि उनके व्रत संकल्प ही बड़ी शिक्षा देते रहते हैं और यह धर्मात्मा का सदुपकार है।

Whether a religious person gives a physical gift or not, being in their presence is like receiving everything because their resolve is a great education.

•••

65. धर्म की सम्पदा का सांसारिक क्षेत्र में भोगना मतलब अग्नि में हाथ जलाना है अर्थात् दुर्गति (दुःख) को पाना है।

Consuming the wealth of religion for the sake of worldly pleasures is like burning your hands in fire, leading to a miserable state.

•••

66. स्वेच्छाचारी पन से रोग, दुर्गति होती हैं।

By indulging in self-willed and unrestrained conduct, one falls into miserable states of rebirth and becomes afflicted with spiritual diseases.

•••

67. संयम के पालन से स्वर्ग, मोक्ष मिलता है।

Following the path of self-restraint and discipline

leads the soul directly toward heaven and ultimate liberation.

•••

68. सेवा, वैयावृत्त करने से भीम जैसी शक्ति को पाते हैं।

Through the selfless service and nursing of the sick and the elderly, one attains great physical and spiritual strength.

•••

69. सत्पात्र को दान देने से छप्पन भोग मिलते हैं।

Giving charity to worthy and holy recipients results in the attainment of abundant prosperity and various enjoyments.

•••

70. लोक कल्याण करने से तीर्थंकर बनते हैं।

Working selflessly for the welfare and benefit of the entire world leads a soul on the path to becoming a Tirthankara.

•••

71. तपस्वियों को नमन करने से उच्च गोत्र मिलता है।

Bowing with deep humility to the holy ascetics leads to a future birth in a high, noble, and respected lineage.

•••

72. दान-धर्म करने से भोगों की प्राप्ति होती है।

The constant practice of charity and living a religious life leads to the easy attainment of all worldly pleasures.

73. मुनियों की पूजा, उपासना ही जग में पूज्य बनाती है।

The worship and sincere service of holy monks make a person worthy of worship in the eyes of the entire world.

•••

74. वीतराग की भक्ति सुंदर रूप को देती है।

Sincere and deep devotion to the Divine gives a person a beautiful, radiant, and attractive physical form.

•••

75. सद्गुरुओं की स्तुति करने से जग में कीर्ति मिलती है।

Praising the virtues of the True Gurus brings fame and respect to a person throughout the corners of the world.

•••

76. थोड़ा आरम्भ, थोड़ा परिग्रह मनुष्य गति का दाता है।

Maintaining a small amount of worldly work and keeping few possessions are the deeds that lead to a human birth.

•••

77. सम्यग्दर्शन का पालन दुर्गतियों से बचाता है।

The practice of right belief and right vision saves a soul from falling into the four miserable states of rebirth.

•••

78. मुनि का अनादर करने से कोड़ीपन मिलता है।

Showing disrespect or causing pain to a holy monk is a direct cause for the terrible disease of leprosy.

•••

79. तपस्वियों की रक्षा करने वाला आगे लोक पूज्य बनता है।

One who protect ascetics become honored in the World.

80. बहुत आरम्भ हिंसा से नरक में जाना पड़ता है।

Excessive involvement in worldly commencement and acts of violence lead the soul directly toward the realms of hell.

•••

81. गुप्त रूप से किया गया पाप गुप्त रोग व्याधियाँ लाकर बड़े कष्ट का कारण होता है।

A sin that is committed in secret brings about secret diseases and great internal suffering that cannot be shared.

•••

82. अधिक कार्यों की जिम्मेदारी मान कषाय न बढ़ाये तो यह बड़े ज्ञानीपन का लक्षण है।

If taking on the responsibility for many tasks does not increase one's ego or pride, it is a sign of great spiritual wisdom.

•••

83. बात-बात पर क्रोध आना, बड़ों की बातें न सुनना ही तीव्र मान कषाय का लक्षण है।

To get angry over very small things and to refuse to listen to the advice of elders are signs of intense pride.

•••

84. गुरु वचन अमृत सम लगना यह महा भव्यता, धर्मज्ञता का लक्षण है।

Having the opportunity to hear words that are like spiritual nectar is a sign of great worthiness and religious knowledge.

•••

85. गुरु जो समीचीन व्यवहार चाहते हैं उसी अनुसार चलना यह गुरु के मन पर राज करना है।

Following the path of right behavior that is desired by the Guru is the true way to rule over the Guru's heart.

•••

86. गुरु प्रसन्न हों तो सर्व कार्य सहज और सरल होते हैं।

If the holy Guru is pleased with your conduct, then

even the most difficult tasks become easy and simple to complete.

•••

87. इस महा दुःखी संसार रूपी भव समुद्र से पार होने हेतु समीचीन निर्ग्रंथ गुरु ही खेवटिया सम भव समुद्र के तारक हैं।

To cross this vast ocean of worldly misery, only the right and unhindered Guru acts as the reliable boatman.

•••

88. मान कषाय छोड़कर गुरु के जीवन में ढल जाना सही आत्मीयता बढ़ाना है।

Leaving behind your pride and molding your own life to match the Guru's life is how you increase true spiritual intimacy.

•••

89. जो गुरु पर अटूट श्रद्धा रख उनकी हर बात उद्धारक रूप मानेंगे तो गुरु उनकी स्वप्न में भी परवाह करेंगे।

If one keeps unwavering faith in the Guru and treats every word as a path to salvation, the Guru will care for them even in dreams.

•••

90. जो गुरु को कष्टदायक और बाधक बनते हैं गुरु उनसे परम वैरागी बन जाते हैं।

Gurus eventually become completely detached from those who become a spiritual burden or an obstacle to their path.

91. प्राणी मात्र में मैत्री, गुणियों के प्रति प्रेम, दुखियों पर करुणा और विपरीत चलने वालों के प्रति माध्यस्थ भाव होना चाहिए।

One should maintain friendship with all beings, love

for the virtuous, compassion for the suffering, and neutrality toward the contrary.

•••

92. संवेग वही है जहाँ पापों से भीरूता होती है।

True spiritual excitement exists only in that heart where there is a real and constant fear of committing sins.

•••

93. वैराग्य वहीं है जहाँ शरीर से निर्मोहता है।

True renunciation and detachment exist where there is a genuine feeling of being separate from the physical body.

•••

94. संवेग और वैराग्य के लिये जगत और शरीर के स्वभाव का चिंतन करना चाहिए।

To develop spiritual excitement and renunciation, one should constantly contemplate the temporary nature of the world and the body.

•••

95. यह जगत रूपी समुद्र सहस्रों दुःख रूपी मगरमच्छों से भरा हुआ है।

This worldly existence is like a vast ocean that is filled with thousands of crocodiles in the form of various sorrows.

•••

96. स्वयं दुःखी होना और अन्य को दुःखी करना यह दुःखों की गर्त में जाने का द्वार है समझो।

Making yourself miserable and causing pain to others is the direct gateway to the deepest abyss of suffering.

•••

97. जो गुरु के दोष निकालते रहते हैं उनसे बड़ा कृतघ्नी जगत् में अन्य

कोई नहीं होता है।

There is no one more ungrateful in this world than those who try to find faults and shortcomings in their Guru.

•••

98. मिट्टी सम कोमल बनो, घड़े सम सर्वथा आकार पाओगे।

Become soft and humble like moist clay, and you will receive the protection and the beautiful shape of a vessel.

•••

99. जो गुरु को भा गया वह सब कुछ पा गया।

The person who has managed to be liked by the Master (the Guru) has truly attained everything in this world.

•••

100. जो गुरु में समा गया, वह सद्गति पा गया।

The one who has successfully merged his mind and soul into the Guru has found the highest form of company.

•••

101. जो कुछ है गुरु का है, सदा ही ध्यान प्रभु का है।

Realize that whatever exists belongs to the Guru, and always keep your mind in meditation on the Lord.

•••

102. असमय से किया अच्छा कार्य भी अप्रशंसा और संक्लेश का कारण हो सकता है।

Even a good deed, if performed at the wrong or inappropriate time, can become a cause of distress and lack of praise.

•••

103. सही समय से किया थोड़ा कार्य भी बहुप्रशंसा और सुख का साधन बन जाता है।

Even a very small task, if completed at the exactly right time, becomes a cause of great praise and happiness.

•••

104. समयानुसार चलना यह एक प्रशंसनीय गुण है।

The ability to move and act according to the requirements of the time is a very praiseworthy and noble quality.

•••

105. जो समय की कीमत न समझे वह धोखा खाता है।

The person who does not understand the true value of time is eventually deceived and left behind by life.

•••

106. समय से धीमी चाल चलने वाला भी पहले पार हो जाता है।

Even a person who walks slowly, but remains mindful of the time, will eventually reach the final destination.

•••

107. प्रमाद जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है।

Internal negligence and spiritual laziness are the greatest enemies of a purposeful and successful life.

•••

108. साधक को रात दस बजे के पूर्व, प्रातः चार बजे के बाद और कभी दिन में नहीं सोना चाहिए।

A spiritual seeker should not sleep before 10 PM, should wake up before 4 AM, and should never sleep during the day.

•••

109. सूर्योदय के पूर्व ब्रह्म मुहूर्त्त का ध्यानाध्ययन स्मृति को प्रखर बनाता है।

Practicing meditation during the Brahmamuhurta before the sun rises makes the memory sharp and the mind clear.

•••

110. वे गुरु अज्ञानी हैं जो शिष्यों और भक्तों को सही ज्ञान से वंचित रख अंधकार में रखते हैं।

Those Gurus are considered ignorant who keep their disciples and devotees in the dark by depriving them of right knowledge.

•••

111. वे गुरु प्रमादी है जो शिष्यों से अधिक स्नेह रख विकथाओं में अनुरक्त होते हैं।

Those Gurus are considered negligent who have excessive worldly affection for disciples and indulge in idle, worldly gossip.

•••

112. वे गुरु अधोगामी हैं जो कुशल अन्यायी शिष्यों को अपने पास रख मिथ्यात्व व पापों का समर्थन करते हैं।

Those Gurus are heading for a spiritual downfall who keep wicked disciples and give their support to falsehood or sins.

•••

113. अधिक परिग्रह का संचय चिंताओं और अधोगति का कारण है।

The accumulation of excessive worldly possessions is a direct cause of mental anxiety and a lower state of rebirth.

114. असत्य बोलने से विश्वासघात व बुराईयाँ बढ़ती हैं।

The habit of speaking lies only serves to increase the cycle of betrayal and the various evils of the world.

•••

115. वस्तु के स्वामी की अनुमति बिना; वस्तु से लालच रखना भाव हिंसा का कारण है।

Taking or coveting an object without the explicit permission of its owner is a cause of internal spiritual violence.

•••

116. जिस वस्तु का कोई स्वामी नहीं वह वस्तु राज्य स्वामित्व की कहलाती है।

Any object that does not have a specific individual owner is considered to be the property of the state.

•••

117. राज्य स्वामित्व की वस्तु के प्रति अन्याय करना दण्डनीय अपराध है।

Doing any kind of injustice or theft toward state property is a serious and punishable offense.

118. अधिक परिग्रह संग्रह चिंताओं की उलझन है।

The habit of storing excessive worldly possessions becomes a tangled web of constant mental anxieties.

•••

119. शास्त्रों को नीचे व उल्टा रखना, थूक लगाकर पलटना महा अविनय का कारण है।

Keeping holy scriptures in low places or upside down, or turning pages with saliva, is a cause of great spiritual disrespect.

•••

120. भगवान और गुरु की तरफ पीठ करके बैठना एक प्रकार का अनादार है।

Sitting in a way where your back is toward the image of God or toward the Guru is a form of serious disrespect.

•••

121. भगवान और गुरु समान या उनके आसन पर बैठना अविनय है

और विद्याहानि का कारण है।

To sit on a seat that is equal in height to God or the Guru is impertinence and causes the loss of earned knowledge.

•••

122. पूज्य आत्माओं से समय मिल जाने पर उपकार मानना एक कृतज्ञता है।

Feeling a sense of deep gratitude upon being blessed with the time and presence of worshipful souls is a great virtue.

•••

123. याचक पने की आदत लोक दृष्टि में गिरा देती है।

The habit of constantly begging from others lowers a person's dignity and value in the eyes of the whole world.

•••

124. बालकों से अधिक वार्तालाप गंभीरता गवाँ देता है।

Losing your sense of seriousness and gravity while playing with children causes you to lose your own spiritual weight.

•••

125. अविरोधी, गूढ़ और निश्चित जगह पर पीक मलादि का छोड़ना शिष्टता का पालन है।

Relieving oneself in a place that is hidden, designated, and causes no conflict or harm is the practice of true decency.

•••

126. बड़ों के प्रति बहुवचन रूप आप व जी करके बोलना शिक्षित, विनीतपने एवं उच्चकुल की निशानी है।

Using respectful plural terms for elders is the sign of a person who is truly educated, humble, and noble-hearted.

•••

127. मजाकी व्यक्ति आदर से वंचित रहता है।

A person who spends their time mocking or belittling others will always remain deprived of receiving true respect.

•••

128. क्रोधी व्यक्ति से तिर्यंच भी भय खाते हैं।

Even the animals of the forest are afraid of a person who is constantly filled with anger and rage.

•••

129. मांसाहारी से सज्जन क्या भोले तिर्यंच भी दूरी बना लेते हैं।

Not only noble-minded people, but even animals choose to keep their distance from one who consumes meat.

•••

130. कूबत से अधिक बोलने से अपमान को झेलना पड़ता है।

A person has to face deep insult and embarrassment by speaking about things that are beyond their true capacity.

•••

131. निंदक-आजीविका से धर्म गवाना पड़ता है।

One eventually loses their religious path and character by earning a living through slanderous and dishonest means.

•••

132. आमदनी से अधिक खर्चा करने से निर्धनता घेर लेती है।

Poverty and lack always surround those whose daily expenses exceed their actual and honest income.

•••

133. व्यसनों के करने से दरिद्रता घेर लेती है।

Poverty and hardship surround those who allow themselves to indulge in various worldly vices.

•••

134. बुरी संगति व्यसनों में फँसा देती है।

Keeping the company of bad or immoral people traps a person in the suffocating cage of addictions.

•••

135. कुशील पुरुष की संगति से नारी का शील पलायन होता है।

The noble character of a woman flees when she finds herself in the company of a lewd or lustful man.

•••

136. नारी की शील रूपी आग पुरुष के शील रूपी घृत को पिघला देती है।

The fire of a woman's lack of character can melt the strength of a man's character just as fire melts ghee.

•••

137. काम ऐसा करो जो सबको भा जाये।

Always strive to perform only those works that are liked, respected, and found helpful by everyone.

•••

138. कुछ ऐसी भी कमाई करो जो परलोक में काम आये।

Earn such a living in this world that will not only help you here but will also be useful to you in the next world.

•••

139. कुल का नाम बढ़ाना है, डुबाना नहीं।

Strive to increase the good name and reputation of your family; do not do anything that would sink its honor.

140. करनी ऐसी हो जो सदियों तक याद रहे।

Let your deeds and actions be so noble and pure that they are remembered by people for centuries to come.

•••

141. स्वयं गाने से नहीं, कीर्ति नेक कार्य से स्वतः मिलती है।

True fame is never achieved by singing your own praises; it comes automatically through the performance of worthy deeds.

•••

142. सत्य कभी परेशान हो सकता है परन्तु पराजित नहीं।

The Truth may take a long time to emerge, but the Truth is never lost or defeated in the darkness.

•••

143. वर्तमान पर ही भविष्य टिका है अतएव वर्तमान स्वच्छ और दृढ़ बनाओ।

Your entire future rests on the foundation of what you do in the present; therefore, make your present clean and strong.

•••

144. विश्वास से ही विश्वस्तता बढ़ेंगी, सन्देह करना छोड़ दो।

Trusting others will eventually increase their trust in you; therefore, stop the habit of doubting everyone.

•••

145. क्षमा प्रार्थी के प्रति क्षमावान होना चाहिए।

One should be large-hearted, kind, and forgiving toward those who come to you and sincerely seek your forgiveness.

•••

146. प्रभु और कुछ नहीं देते, केवल हमारे परिणामों को निर्मल कर देते हैं।

The Lord does not give us material objects; the Lord only helps us to purify our own inner thoughts and intentions.

•••

147. परिणामों की निर्मलता में पुण्य है और पुण्य ही सुख का दाता है।

There is a great power of merit in the purity of one's thoughts, and that merit is the true giver of all

happiness.

•••

148. प्रभु के दरबार में देर हो सकती है, पर अन्धेर नहीं।

There may be a delay in the justice of the Lord's court, but there is never any darkness or ultimate injustice there.

•••

149. प्रभु भक्ति में वह शक्ति है, जो मुक्ति देती है।

There is a supreme and divine power in devotion to the Lord that has the strength to grant the soul final liberation.

•••

150. संतों का सत्संग संसार के दुःखों का अन्त कर देता है।

Seeking and keeping the company of holy saints puts an end to the endless and repeating miseries of the world.

•••

151. क्षमावान से बढ़कर विश्व में कोई बड़ा वीर नहीं।

No one in the entire world is a greater hero than a person who possesses the internal strength to forgive.

•••

152. क्षमा नहीं करने से बैर की परंपरा चलती है।

The failure to practice forgiveness leads to a long and painful tradition of enmity, hatred, and revenge.

•••

153. क्षमावाणी करने से हृदय निर्मल होता है।

The constant and intentional practice of forgiveness is what purifies the inner heart of a human being.

•••

154. क्षमावान का हृदय बड़ा ही निर्मल और विशाल होता है।

The heart of a person who is forgiving is very pure, calm, peaceful, and spiritually vast.

•••

155. अधिक परिग्रह का संग्रह अधोगति का कारण है।

The accumulation of excessive and unnecessary worldly possessions is a cause of a lower and painful state of rebirth.

•••

156. मायाचार; तिर्यंच गति में ले जाता है।

Following a path of misconduct and immoral behavior leads the soul toward a birth in the animal kingdom.

•••

157. कोमल और संतोषी परिणाम मनुष्यगति का दाता है।

Possessing soft, humble, and contented thoughts and results are the virtues that grant the soul a human birth.

•••

158. व्रतों के पालन से स्वर्ग मिलता है।

Strictly following the religious vows and moral codes leads the soul to the happiness of the heavenly realms.

•••

159. मुनि दीक्षा ही मोक्ष का साधन है।

Taking the holy initiation as a monk is the only true and final means of achieving complete liberation.

•••

160. पत्थर व मिट्टी के घर अनंतों बार मिलते हैं और छूटते हैं... अब शाश्वत घर सिद्धालय को पाने का पुरुषार्थ और प्रयास करो।

Houses made of stone and clay are received and lost

infinite times; now make the effort to reach the eternal home of the liberated.

•••

161. मोहियों का मोह संसारी जीवो को संसार में ही मोहित रखता है।

The worldly attachment of those filled with delusion keeps them constantly infatuated and trapped within the cycle of worldly existence.

•••

162. परिवार और लौकिक जीवन से विरक्त व्यक्ति ही गुरु का सच्चा शिष्य बन सकता है।

Only a person who is truly detached from family and the mundane worldly life is capable of becoming a true and authentic disciple of the Guru.

•••

163. पारिवारिक व लौकिक जीवन में अनुरक्त व्यक्ति गुरु का भक्त तो बन सकता है लेकिन शिष्य नहीं।

A person who remains deeply involved and attached to family and worldly life may become a devotee of the Guru, but they cannot truly become a disciple.

•••

164. गुरु का सच्चा शिष्य वही है जो कुंभकार के समक्ष मिट्टी सम समर्पित होता है।

The true disciple of the Guru is one who completely surrenders himself before the Guru, just as moist and soft clay is surrendered before the potter.

•••

165. किसी को निरभिमानता से समझाइस देने का अर्थ उससे आत्मीयता रखना है।

To provide correction or advice to someone with complete lack of pride means that you maintain a

deep and heartfelt sense of spiritual intimacy with them.

•••

166. जो पर का है और अपने में समर्पित नहीं उसे शिक्षा देना समय को व्यर्थ खोना है।

To provide education or guidance to one who belongs to the external world and is not surrendered to their own inner soul is to waste one's precious time in vain.

•••

167. आत्मीयता में शिक्षा अमृतसम सुखकारी है।

Education and guidance provided with a sense of deep intimacy are as life-giving and pleasant as the divine nectar.

•••

168. आत्मीयता के बिना शिक्षा भार और दुःखदायी सम भी हो सकती है।

Without a foundation of deep intimacy, education can become a heavy burden and a source of sorrow for the recipient.

•••

169. समय व्यर्थ नहीं खोना क्योंकि संयमी जीवन को देवता भी तरसते हैं।

Do not waste your time in vain, for even the celestial beings in heaven yearn for the disciplined life of self-restraint.

•••

170. अपने मंगल में सबका मंगल हो ऐसा भाव रखो।

Maintain the noble and grand thought that within the pursuit of your own welfare, the welfare of every living being should be included.

•••

171. अपने कल्याण के पहले सबका कल्याण हो इसी में लोक कल्याण है।

The true welfare of the people lies in the profound belief that the welfare of everyone else should come before your own individual welfare.

•••

172. मन रूपी भूत को धर्म के कार्य में अनुरक्त रखो अन्यथा यह अपना गला दबायेगा अर्थात् पापार्जन करा दुर्गति में ले जायेगा।

Keep the ghost of your mind constantly engaged in the righteous works of religion; otherwise, it will strangle you, lead you to accumulate sins, and throw you into a miserable state of rebirth.

•••

173. धर्मात्मा के एक-एक क्षण को देवता भी आदर देते हैं।

Even the celestial beings offer their deepest respect to every single moment spent by a truly religious and righteous soul.

•••

174. आशीर्वाद तो दिल से दिया जाता है, न कि मात्र पिच्छिका से।

A true blessing is always given from the inner depths of the heart, and it is not merely transmitted through the ritual use of the peacock-feather whisk (Picchika).

•••

175. पिच्छि-पिच्छि कहने से पिच्छिका पीछे पड़ जायेगी, कमण्डलु दिलवाकर रहेगी।

By constantly demanding the peacock-feather whisk (Picchika), the spirit of the whisk will eventually follow you and compel you to accept the water-pot (Kamandalu), leading you toward formal initiation.

•••

176. आशीर्वाद न विशेष होता है, न सामान्य। वह तो आशीर्वाद ही होता है, नेक कार्य के लिये।

A blessing is neither something extraordinary nor something ordinary; it is simply a blessing given for the steadfast performance of noble and virtuous deeds.

•••

177. शांतिधारा करने मात्र से शांति नहीं; बल्कि शांति से रहने और शांति के कार्य करने में शांति है।

Attaining peace is not achieved merely by performing the ritual stream of peace (Shantidhara); rather, it comes from the practice of living one's life with actual peace.

•••

178. जहाँ हाथ का आभूषण दान, कण्ठ का आभूषण सत्य और कान का आभूषण शास्त्र हो वहाँ अन्य आभूषण से क्या प्रयोजन है।

Where charity is the ornament of the hand, truth is the ornament of the throat, and the sacred scriptures are the ornament of the ears, what is the purpose of any other worldly ornaments?

•••

179. मूर्ति बनती नहीं प्रकट होती है क्योंकि शिल्पी को तो पाषाण में मूर्ति पहले से ही दिखती है। वह तो मात्र अनावश्यक पाषाण को तोड़ता है और मूर्ति स्वयं प्रकट हो जाती है।

A divine idol is not created, it is merely revealed, because the sculptor already sees the idol within the stone; he merely breaks away the unnecessary stone and the idol manifests itself.

•••

180. मूर्ति की तरह इस आत्मा से परमात्मा प्रकट हो सकते हैं। मात्र कर्मों को तोड़ने की जरूरत है।

Just like the idol, the Supreme Soul can manifest

from within this individual soul; there is only a need to break the bonds of accumulated karmas.

•••

181. मात्र नाम से नहीं सही काम करने से सही नाम होता है।

A true name and reputation are not established merely by the name itself, but are earned through the performance of correct and righteous deeds.

•••

182. गुरु का उपदेश सुनकर जो घोड़े को पानी दिखा लाओ कहने पर मात्र पानी दिखाकर लाने के समान अधूरा कर्म करता है वह शिष्य नहीं, बल्कि जो पिलाकर लाने के समान कार्य को इशारे पर ही पूरा कर देता है वह आज्ञा का सही अर्थ समझकर शिष्य कहलाता है।

One who, upon hearing the Guru's command to "show the horse the water," performs an incomplete task like merely showing the water and returning is not a true disciple; rather, the one who completes the task as if bringing the water for the horse to drink, fulfilling the command by understanding the true intent behind the hint, is called a disciple.

•••

183. गुरु; शिष्य को बाँस से बाँसुरी सम सुंदर बना देते हैं।

The Guru transforms the disciple into someone as beautiful as a flute made from a simple piece of bamboo.

•••

184. संस्कार बचपन में दिये जाते हैं, न कि पचपन में और बचपन के संस्कार पचपन क्या! कई जन्मों तक अर्थात् जब तक मोक्ष न मिले तब तक साथ देते हैं।

Religious values and impressions (Sanskars) are given in childhood, not in old age; and the values instilled in childhood—what to speak of old

age—stay with a soul through many births until final liberation is achieved.

•••

185. गुरुचरणों में मिट्टी सम समर्पित होने से घड़े सम सुयोग्य बन जाते हैं।

By surrendering oneself at the feet of the Guru like moist clay, a soul becomes as capable and worthy as a well-formed vessel.

•••

186. सहजता और सरलता ही धर्म की सफलता है और धर्मी की पहचान भी।

Natural ease and simplicity are the true signs of success in religion and are the true identity of a religious person.

•••

187. आत्मा की निर्मलता ही धर्म है। मात्र क्रियाकाण्ड या आडम्बर नहीं।

The purity of the soul itself is the true religion; it is not merely found in external rituals or outward displays.

•••

188. प्रायः जो कुछ नहीं जानते वे मौन रहते हैं और जो सबकुछ जानते हैं वे मौन रहते हैं।

Generally, those who know nothing remain silent, and those who know everything also remain silent.

•••

189. मोह अपने स्वरूप को भुला देता है और वैराग्य अपने स्वरूप से मिला देता है।

Worldly attachment (Moha) makes one forget their true self, whereas renunciation (Vairagya) connects one back to their own true nature.

•••

190. स्वार्थीपन सभी को दगा देता है आत्मीयपन पर दोषों को दबा देता है।

Selfishness eventually betrays everyone, while a sense of intimacy and love helps to suppress the faults of others.

•••

191. वैषयिक सुख क्षणिक होता है लेकिन आत्मिक सुख चिर स्थायी होता है।

The pleasure derived from the senses is momentary, but the happiness derived from the soul is eternal and everlasting.

•••

192. जब तक मन मिलता है तब तक गुणों के दल खिलते हैं और जब मन छलता है तब दुःखों के शूल मिलते हैं।

As long as the minds of people meet, the virtues of a person bloom; when the mind deceives, only the flowers of sorrow are received.

•••

193. निश्छल मुस्कान पर गंभीरता ही अमृत है और छलमय मुस्कान एक मीठा जहर है।

Maintaining seriousness accompanied by an innocent smile is like nectar; a deceptive or hidden smile is like a sweet poison.

•••

194. समर्पित ऐसे होना जिसमें मन घुलमिल जायें और फिर दोष कुछ भी न भायें।

Be dedicated in such a way that your mind merges with the divine and worldly faults no longer have any appeal to you.

195. एक बार का विश्वासघात जन्मों का रिश्ता तोड़ देता है।

A single act of serious betrayal has the power to break a relationship that has lasted for many past lifetimes.

•••

196. गुरु के वचन आत्मसात करने योग्य हैं भले वह कड़वी औषध-सम क्यों न हों।

The words of the Guru are worth internalizing and following, even if they seem like bitter medicine at the start.

•••

197. गुरुवचन उस देशी औषध समान हैं जो भले देर से काम करें परंतु दोष रूपी रोग को मूल से समाप्त कर देते हैं।

The Guru's words are like traditional, natural medicine; they may take time to work, but they uproot the disease of faults entirely.

•••

198. धर्म-रक्षा में सर्वस्व लुटा दो क्योंकि यही शील है और गुण रूपी प्राणों का रक्षक है।

Be ready to sacrifice everything for the protection of religion, as religion is the true and ultimate protector of all virtues.

•••

199. सागर-सम गंभीरता और विनयशीलता धर्मात्मा और मोक्षमार्गी की पहचान है।

Having a seriousness like the ocean and deep humility are the true signs of a religious soul and a traveler on the path to liberation.

•••

200. अपना मन जब अपने गुण दोषों पर ऊहापोह करता है। तब वह सच्चा वकील होता है और अपना मन जब सही निर्णय कर अपने धर्म में दृढ़ हो जाता है तब वह स्वयं सच्चा जज कहलाता है।

When the mind deliberates on its own virtues and faults, it is a true lawyer; when it makes the right decision for the soul, it is a true judge.

•••

201. मोह के बन्धन को तोड़ने एवं मोक्ष–मार्ग का लक्ष्य बनाने के लिए स्वयं का निर्णय ही सर्वोपरि होता है।

To break the bonds of worldly attachment and set the goal for liberation, one's own firm and internal decision is paramount.

•••

202. बड़े, बूढ़ों की अपेक्षा अल्प वयस्क वैराग्य भी बड़ा प्रभावी हो सकता है बशर्ते संसार से उदासीनता बस हो।

Renunciation taken at a young age can be very effective, provided it stems from a true and deep indifference to the world.

•••

203. सुखी अवस्था में लोग धर्म को भूल जाते हैं और जब दुःख आता है तब दुष्कृत्य के दिन याद आते हैं।

People often forget their religion in happy conditions, but they only remember their misdeeds when sorrow arrives.

•••

204. मन के खिन्न होने पर निराश नहीं होना; बल्कि वैराग्य और गुरु के सन्देश को याद करने से ये मन प्रसन्न हो जाता है।

Do not be disappointed when the mind is distressed; remembering the message of renunciation and the Guru makes it happy again.

•••

205. प्रतीक्षा करने से जो वस्तु मिलती है, उसका अधिक मूल्य होता है। सहजता से प्राप्त वस्तु की अज्ञ उपेक्षा कर देते हैं।

Something that is received after a long period of waiting has more value; people often ignore things obtained too easily.

•••

206. ज्ञानियों को समय; धनादिक से भी अधिक कीमती होता है। धर्ममय जीवन का काल अतीव दुर्लभ होता है।

For the wise person, time is more precious than any wealth; the period of a religious life is very rare to obtain.

•••

207. उस माहौल को याद करो जिससे हमें वैराग्य हुआ था उस माहौल को भूल जाओ जिससे कभी मोह बढ़ा था।

Always remember the environment that caused you to feel renunciation; forget the environment that increased your attachment.

•••

208. शक्ति और समय का मूल्य नहीं समझने वाला अन्त में अफसोस के अलावा कुछ नहीं पाता।

One who does not understand the value of their own internal strength and time finds nothing but regret at the end of life.

•••

209. मात्र शरीर की सजावट; पर को प्रभावित भले करे; परंतु समय व जीवन व्यर्थ कर देती है।

Just decorating and beautifying the physical body may impress others, but it wastes the precious

opportunity of this life.

•••

210. आचरण के बिना ज्ञान लंगड़ा है और दर्शन के बिना ज्ञान अंधा है।

Knowledge without proper conduct is like a person who is lame, and knowledge without right belief is like one who is blind.

•••

211. अशुद्ध खानपान से विचारों की शुद्धि बिगड़ जाती है। शुद्ध खानपान से दया और भक्ति की भावना आती है।

Consuming impure food and drink spoils the purity of one's thoughts; true devotion and compassion arise from pure food.

•••

212. सही अवसर को सफल बनाओ। षोडशकारण के पुण्य से तीर्थंकर बन जाओ।

This is the right and golden opportunity in your life; make it successful and aim for the status of a Tirthankara.

•••

213. बस! यहीं हैं महावीर.... खोजने की जरूरत है। आत्मा में परमात्मा छिपा है।

The Great Soul is right here within you; the Supreme Soul is hidden inside, you just need to search. Do not forget... become God through devotion.

•••

214. आशा से आसमान टिका है, विश्वास पर ही विश्व टिका है।

The sky rests on the foundation of hope, and the entire world rests on the foundation of trust.

•••

215. जिंदगी की राह में शूल भी हैं... भूल मत जाना और भक्ति से भगवान बनते हैं;... चूक मत जाना।

There are many thorns on the path of life; be very mindful and careful of your steps.

•••

गुरु-सन्निधि

-आचार्य श्री आर्जवसागर जी

पारसमणि जब लोह को, स्वर्ण बनाती जान।
गुरु-सन्निधि हि भव्य को, शुद्ध बनाती मान॥ 1॥

जप-माला गुरु हाथ में, लेकर जपते नाथ।
गुरु-हस्त आशीष पा, जाप मिले, गुरु साथ॥ 2॥

धर्म-पुस्तिका हाथ ले, गुरु पढ़ते शुभ-काल।
धर्म-लेख की लेखनी, पा भवि मालामाल॥ 3॥

शुचिता हेतु हाथ में, रहे कमण्डल साथ।
छूते भवि जब उपकरण, पुण्य बढ़े दिन रात॥ 4॥

संयम पालें पिच्छि से, करते जीव सम्हाल।
मिले पिच्छिका भव्य हो, जीवन हो खुशहाल॥ 5॥

गुरु चौकी पावन बने, गुरु का हो स्पर्श।
भविजन के उपयोग में, सदा बढ़ावे हर्ष॥ 6॥

पावन होती वह धरा, जहँ गुरु-पद रज होय।
पाप कटें व पुण्य से, गम सारा तब खोय॥ 7॥

गुरु चरण की हो शरण, अनुभव मिलता रोज।
बढ़े साधना, त्याग तप-का बढ़ता है ओज॥ 8॥
गुरु ज्ञान के हेतु शुभ, नित्य पढ़ाते ग्रन्थ।
ज्ञान ढले चारित्र में, शीघ्र बनें निर्ग्रन्थ॥ 9॥

शिक्षा से बढ़ कर रही, जिन दीक्षा पहचान।
गुरु सन्निधि की दीक्षा, मोक्ष दिलाता जान॥ 10॥

जिस गृह में पावन चरण, गुरु के पड़ते जान।
'आर्जव', मार्दव आदि गुण, बढ़ें सुखद कल्याण॥ 11॥

चैत्र कृष्णा तृतीया
6 मार्च 2026 सिद्धक्षेत्र तारंगा जी

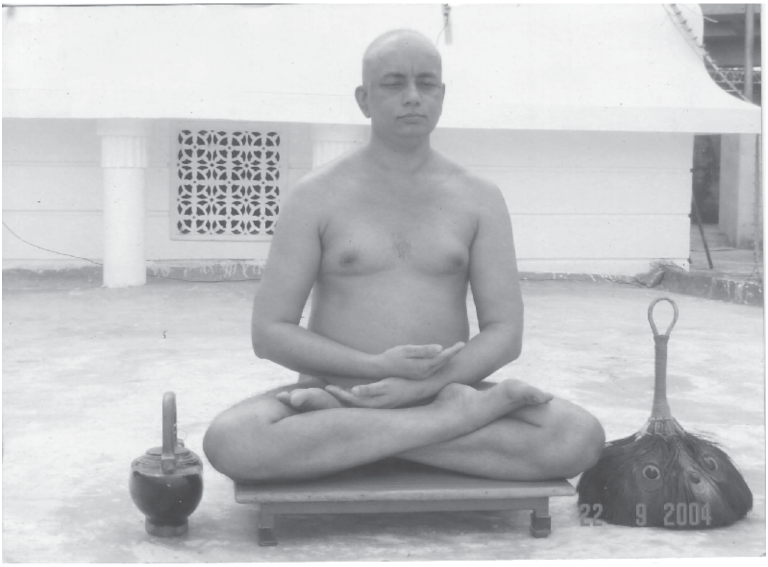

गुरु-गुणानुवाद

-बहिन ऋषिका जैन, दमोह
(बी.ई., एम.ए., पी.एच.डी.)

1. जिनमें शीतल शशि सम धारा,
जिनमें रवि सम ज्ञान उजाला,
जिनसे तप का हो उजियारा,
जिनका जीवन बड़ा ही प्यारा॥
ऐसे गुरु का मिले सहारा,
ऐसे गुरु को नमन हमारा॥

2. बुंदेलखण्ड रत्नों की खान,
विद्या गुरु के कुल की शान,
वो हैं आर्जव संत महान,
करते जग-जन का कल्याण,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

3. अध्यात्म है प्राण समान,
रहा लक्ष्य निर्जरा जान,
निज आतम का करते ध्यान,
जिनको पाना शिव का धाम,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

4. फुटेराकलां है जन्म स्थान,
अष्टमी भाद्र शुक्ल की जान,
माया-शिखरचंद सुत मान,
पारसचंद था जिनका नाम,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

5. अल्प उम्र में जागा ज्ञान,
संसार असार की की पहचान,
सोनागिरि की भू शुभ शान,
धार दिगंबर भेष महान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

6. तप करते हैं आठों याम,
साधना जिनकी रही महान,
जिनकी ख्याति विश्व में जान,
भविजन गाते तव गुणगान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

7. नैतिकता का देते ज्ञान,
अहिंसा जिनमें रही प्रधान,
शिक्षा, संस्कार सोपान,
जनमानस में है पहचान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

8. हिन्दी साहित्य है वरदान,
जैन धर्म का गौरव जान,
साहित्यिक तव-कला महान
योग-ध्यान का रखते ज्ञान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

9. बुंदेलखण्ड की आप हैं शान,
उत्तर दक्षिण देते ज्ञान,
देश–विदेश में आपका नाम,
सब जन कहते हैं भगवान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

गुरुवर की रचनाएँ (कृतियाँ)

10. कृतियाँ गुरु ने रचीं महान,
लेखन रत नित; है पहचान,
बहुभाषा का जिनको ज्ञान,
मोक्ष महल पायेंगे धाम,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

11. तीर्थोदय भी रचा महान,
मोक्ष प्रदायक काव्य है शान
जैनागम संस्कार प्रधान,
आगम अनुयोग सु–जान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

12. आध्यात्मिक प्रवचन संज्ञान,
पर्यूषण पीयूष रसपान,
श्री अंतादि शतक महान,
पद्यानुवाद धरोहर जान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

13. सदाचार सूक्ति का ज्ञान,
होता ज्ञानवर्धन जान,
गुरु गुण–महिमा गुण की खान,
आशीर्वाद शतक सम्मान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

14. तीर्थंकर जिन–स्तुति जान,
आर्जव कविताओं का ज्ञान,
आत्मोद्धार शतक सुजान,
सन्मार्ग प्रभावना पहचान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

15. प्रवचन की है कला महान,
जिसको सुनकर जगता ज्ञान
रचा लोक कल्याण विधान,
ॐ योग का करना ध्यान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

16. आहारौषध का विज्ञान,
कहते हैं विश्व के भगवान,
आध्यात्मिक सु–संत महान,
अन्तर्राष्ट्रीय हुआ सम्मान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

17. विश्व रिकार्ड में आपका नाम,
आपकी कृतियाँ लगी महान,
जिसे देख उनका सम्मान,
हुआ देश-विदेश में जान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

18. नेशनल इंटरनेशनल मान,
एशियन, लंदन, यू.एस.ए. नाम,
गिनीज, इण्डिया, यू.एन. शान,
लिमका बुक में गुरु का नाम,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

19. डॉक्टरेट से जिनका सम्मान,
डी.लिट्. मानद उपाधि मान
फिलासॉफी का रखते ज्ञान,
आध्यात्मिकता गुरु पहचान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

20. भारत गौरव रत्न सम्मान,
पद्मश्री, स्वर्ण भारत का मान,
राष्ट्रहित समाज सेवा में नाम,
ब्रह्माण्ड के देवता जान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

21. श्रेष्ठ रत्न अवार्ड है शान,
नव भारत सेवा सम्मान,
श्रेष्ठ सद्भावना को जान,
विद्या रत्न है स्वाभिमान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

22. गुरु का तप-साधना शान,
विश्व गूँज में है पहचान,
अन्तर्राष्ट्रीय यूनिक मान
देश समाज का होता नाम,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

23. ऐसे गुरुवर बड़े महान
करते स्व-पर का कल्याण,
जिनकी वाणी बड़ी महान,
गुरु से ऋषि का बढ़ता ज्ञान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान,
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

चैतन्य कृतियाँ (शिष्यगण)

24. सुभद्र महान नमित शुभनाम,
भाग्य महत् भास्वत सुख धाम,
विलोक विशोध विबोध महान,
विदित विभोर लेते गुरु नाम,
ऐसे गुरु का करते ध्यान।
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

25. मुनि सजग सागर शुभ नाम,
सानंद करते गुरु का ध्यान,
ऐलक अर्पण–हर्षित जान,
करते निज–पर का कल्याण,
ऐसे गुरु का करते ध्यान।
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

26. प्रतिभा–राजित आर्यिका नाम,
सुयोग–मार्मिकमति सुजान,
ज्ञानार्जन में सभी महान,
गुरु आज्ञा का रहता ध्यान,
दिव्य अलौकिक कला समान,
ऐसे गुरु का करते ध्यान।
आर्जव गुरु को लाख प्रणाम॥

गुरु को ध्याते आठों याम।
गुरु को 'ऋषिका' लाख प्रणाम॥

11/11/2025
तपोभूमि उज्जैन (म.प्र.)

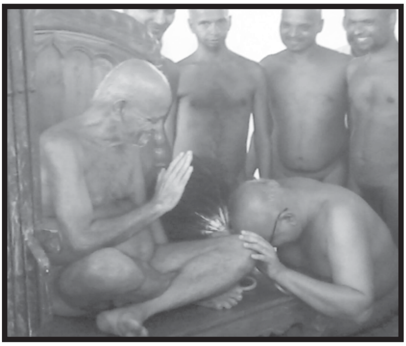

गुरु-समर्पण-शतक

-बहिन ऋषिका जैन, दमोह
बी.ई., एम.ए., पी.एच.डी. (संलग्न)

गुरु आशीष शुभ हमको देना।
ऋषि जन-जीवन, शुभ कर देना॥ 1॥

धन्य-धन्य गुरुवर का जीवन।
ऋषि समर्पण, हो ये तन मन॥ 2॥

मोक्षमार्ग के गुरो प्रणेता।
ऋषियों का यम, सदा शोभता॥ 3॥

गुरुओं से मिलता सद्ज्ञान।
ऋषि का होवे शुभमय ध्यान॥ 4॥

गुरु का वरद-हस्त नित होगा।
ऋषि का जीवन-वन महकेगा॥ 5॥

गुरु-जन सबको राह बताते।
ऋषि बन उत्तम गति को पाते॥ 6॥

गुरु-कदमों पर चलते जाओ।
ऋषि बन निज-वन को महकाओ॥ 7॥

सच्चा-पथ दिखलाते गुरुवर।
जो अपनाले ऋषि बन; भव तर॥ 8॥

रत्नत्रय के धारक गुरुवर।
भव्यों के उद्धारक ऋषिवर॥ 9॥

गुरुओं की वाणी सुख देती।
पावन-मन ऋषि का कर देती॥ 10॥

गुरुओं के वचनामृत पीते।
ऋषि बन जीवन सदा ही जीते॥ 11॥

गुरुवर ने सन्मार्ग दिखाया।
ऋषि–सम सच्चा पथ सिखलाया॥ 12॥

गुरु ज्ञान के भंडारी हैं।
ऋषि–जनों के उपकारी हैं॥ 13॥

सु–गुरु ज्ञान की ज्योति जलाते।
उत्तम ऋषि–पद याद दिलाते॥ 14॥,

जिन–आगम बतलाते गुरुवर।
शुभ–चर्या सब पाते ऋषिवर॥ 15॥

गुरुओं का चौमासा होता।
ऋषि–जीवन उन्नत कर देता॥ 16॥

गुरुवर–गुण के सागर होवें।
ऋषि–सम त्यागी तन–मन होवें॥ 17॥

गुरुवर भव से पार लगा दो।
ऋषि बना; उद्धार करा दो॥ 19॥

गुरु से सीख सदा मिल जाये।
ऐसी ऋषि शुभ–भावन भाये॥ 20॥

गुरु ने हमको राह दिखाई।
ऋषि मोक्ष–मग है सुखदाई॥ 21॥

गुरु हमारे गुणों की खान।
ऋषि करते गुरुवर गुणगान॥ 22॥

गुरु की सीख भविक पा लेते।
ऋषि–सम शुभ–गुणगण पा लेते॥ 23॥

गुरु–रज पाना अहो भाग्य है।
ऋषि बन उत्तम निज सौभाग्य है॥ 24॥

गुरुवर सबके उद्धारक हैं।
ऋषिगण भवोदधि तारक हैं॥ 25॥

गुरु-वाणी अमृत-सम भाती।
भव्यों को मुनि-ऋषि बनाती॥ 26॥

गुरु-वचन से आत्म-शुद्ध हो।
मोक्षमार्ग पा, ऋषि विशुद्ध हो॥ 27॥

गुरु-आशी से शिव-पथ चलते।
ज्ञान, ध्यान में ऋषि-सम ढलते॥ 28॥

गुरुवर मेरे धर्म-प्रभावक।
गद्-गद् होते ऋषि व श्रावक॥ 29॥

गुरु कहते हैं समय ना काटो।
ऋषि बन करके कर्म हि काटो॥ 30॥

गुरु-भक्ति से जीवन-मंगल।
ऋषि-सुसंग हो टले अमंगल॥ 31॥

मम-जीवन वरदान हैं गुरुवर।
मोक्षमार्ग-पहचान हैं ऋषिवर॥ 32॥

गुरु-आचरण महिमा न्यारी।
ऋषि-सह सबको लगती प्यारी॥ 33॥

गुरु का आत्म-ज्ञान है उत्तम।
ऋषि पद पाता बने जगोत्तम॥ 34॥

आध्यात्मिक-वच बोलें गुरुवर।
हो निःस्वार्थी जीवन ऋषिवर॥ 35॥

गुरु का जीवन स्वच्छ है लगता।
ऋषि बनने का मन है करता॥ 36॥

विनीत जीवन होता जिसका।
गुरु को भाता, चारित ऋषि का॥ 37॥

बढ़े आचार हि गुरु से ऋषि का।
भव-भव सफल ही, होता ऋषि का॥ 38॥

ऋषि का गुरु से रहा वास्ता।
पुण्य-प्राप्ति का सरल रास्ता॥ 39॥

ऋषि का देना गुरुवर साथ।
हर-पल, हर-क्षण सिर पर हाथ॥ 39॥

ऋषि का भक्ति-भाव रहे जहँ।
गुरु मोक्ष का द्वार कहा तहँ॥ 40॥

गुरु की चर्या ऋषि को भाती।
ऋषि-जीवन को सफल बनाती॥ 41॥

गुरुवर मेरी सदा ही इच्छा।
ऋषि जैसी हो मेरी दीक्षा॥ 42॥

गुरु हमें जिन-दीक्षा देना।
ऋषि बना शिव - शिक्षा देना॥ 43॥

गुरु हमारा-साथ निभाना।
ऋषि बनें; फिर शिवपुर जाना॥ 44॥

गुरु-विहार की अनुपम याद।
भू-पावन, ऋषि पड़ते पाद॥ 45॥

गुरु-वच; देते सुखकर मोक्ष।
ऋषि अपनाते, मिलता मोक्ष॥ 46॥

गुरु कहते हैं- आत्म अमर है।
ऋषिमग सबका मोक्ष-सफर है॥ 47॥

अनन्त–गुणों की खान हैं गुरुवर।
ऋषि–जनों की शान है गुरुवर॥ 48॥

गुरु की वाणी, जग–कल्याणी।
ऋषि बनकर के तरते प्राणी॥ 49॥

लोक कल्याण की भावन भाएँ।
गुरु–ऋषि बन, प्रभु–रूप को पाएँ॥ 50॥

गुरु कहते हैं मौन धारना।
ऋषिगण लक्ष्य है भव–सुधारना॥ 51॥

गुरु–उपमायें बड़ी निराली।
ऋषियों को सुख देने वाली॥ 52॥

पंचाचार प्रवीण हैं गुरुवर।
ज्ञान ध्यान तप लीन हैं ऋषिवर॥ 53॥

गुरु–कदमों पर, चलते जाओ।
ऋषि–जीवन को सफल बनाओ॥ 54॥

गुरु के अनुभव भाग्य से मिलते।
ऋषिवर सदा हि याद हैं रखते॥ 55॥

नीरस भोजन लेते गुरुवर।
समता–सह तप करते ऋषिवर॥ 56॥

गुरु का दर्शन जिसको मिलता।
अहो भाग्य! वह, ऋषि–सम ढलता॥ 57॥

त्रय–गुप्ति में रमते गुरुवर।
परिषह सब ही सहते गुरुवर॥ 58॥

राग–द्वेष के त्यागी गुरुवर।
मोह–त्याग, सम–धारी ऋषिवर॥ 59॥

शाश्वत सुख के दायक गुरुवर।
तीर्थों के उद्धारक ऋषिवर॥ 60॥

सिद्धशिला पर प्रभुवर वास।
शिव पाने, ऋषि; गुरु के पास॥ 61॥

गुरुवर रत हों ज्ञान-ध्यान में।
ऋषिगण हों रत, गुरु-सम्मान में॥ 62॥

वात्सल्य की खान हैं गुरुवर।
जैनधर्म की शान हैं ऋषिवर॥ 63॥

विद्या-गुरु के शिष्य निराले।
आर्जव ऋषिवर, जन-जन प्यारे॥ 64॥

महावीर-प्रतिमूर्ति गुरुवर।
ज्ञान ध्यान की ज्योति ऋषिवर॥ 65॥

गुरु-वचनों का, पालन करते।
पंच समिति सह-ऋषिगण चलते॥ 66॥

गुरुवर, ऋषि को राह दिखाते।
ऋषि-जन जीवन में अपनाते॥ 67॥

दस-धर्मों के धारी गुरुवर।
षडावश्यक पालें ऋषिवर॥ 68॥

गुरु करवाते षोडसकारण।
ऋषिगण भाते सोलह भावन॥ 69॥

गुरु को करते शत शत वंदन।
ऋषि का करते सब अभिनंदन॥ 70॥

सम्यग्दर्शन, गुरु बतलाते।
ऋषि बनने का मार्ग बताते॥ 71॥

व्रत देने में, कुशल हैं गुरुवर।
ऋषिगण शिक्षा लेते मन-भर ॥ 72 ॥

परिषह-सहें, समता रख गुरुवर।
ऋषि-मुनि व्रती, बनाते गुरुवर ॥ 73 ॥

गुरु-जीवन संयम-सह महके।
ऋषि बनते सोने-सा चमके ॥ 74 ॥

गुरु-मुद्रा ध्यान-सह होवे।
मोक्ष-लक्ष्य ऋषियों में शोभे ॥ 75 ॥

क्षमा-भाव, अवतारी गुरुवर।
क्रोध विजय के धारी ऋषिवर ॥ 76 ॥

कायोत्सर्ग में लीन हों गुरुवर।
लगते जैसे वीर हैं गुरुवर ॥ 77 ॥

गुरु में बसते चारों धाम।
याद करें; ऋषि चारों याम ॥ 78 ॥

मन-वच-तन से, वंदन गुरुवर।
मिटे लोक का, क्रंदन ऋषिवर ॥ 79 ॥

गुरु-आशी से, दृढ़ता आती।
पल-पल ऋषि की, याद दिलाती ॥ 80 ॥

महावीर-सा रूप है गुरु का।
आर्जव-मय जीवन हो ऋषि का ॥ 81 ॥

मोक्ष-मार्ग उपदेशक गुरुवर।
दसधर्मों के पालक ऋषिवर ॥ 82 ॥

भारत-भू की शान हैं गुरुवर।
जैन-धर्म-पहचान हैं ऋषिवर ॥ 83 ॥

तीर्थोदय उपकारक गुरुवर।
जैन–भविक उद्धारक ऋषिवर॥ 84॥

अनुयोगों के, ज्ञानी गुरुवर।
भव्यों के वरदानी ऋषिवर॥ 85॥

ऋषि–जीवन के, गुरु निर्देशक।
आध्यात्मिक–प्रवचन उपदेशक॥ 86॥

शिल्पी; मुनि–मूरत के गुरुवर।
जिनवर–मूरत, धारक ऋषिवर॥ 87॥

सदाचार बहु–सूक्ति रचना।
ऋषि की वीतराग संरचना॥ 88॥

गुरु; लेखक हैं ध्यान–शतक के।
जो ऋषि ध्याते, भव न भटके॥ 89॥

आत्मोद्धारक–वच गुरु कहते।
ऋषि समता को, धारण करते॥ 90॥

'ओम् योग' के कर्त्ता गुरुवर।
दुःखहर्त्ता, सुख–दाता ऋषिवर॥ 91॥

प्रभु भी छवि, गुरु में दिखती है।
ऋषि की छवि, जग–दुःख हरती है॥ 92॥

परमागम के, ज्ञानी गुरुवर।
अध्यातम के, ध्यानी ऋषिवर॥ 93॥

प्रभु–समर्पित, मेरे गुरुवर।
धर्म–ध्वजा फहराते ऋषिवर॥ 94॥

भव्यों को, सन्मार्ग दिखाते।
ऋषि जीवन को, गुरु सजाते॥ 95॥

गुरु का शुभमय, कर गुणगान।
ऋषि मंगल हों, आठों याम॥ 96 ॥

गुरु की महिमा, गाते जाओ।
ऋषि-सम गुण-गण पाते जाओ॥ 97 ॥

गुरु; कठोर-आज्ञा, न भार।
ऋषि को कर दें, भव से पार॥ 98 ॥

गुरु-आज्ञा में, जीवन अर्पित।
ऋषि बनने को पूर्ण समर्पित॥ 99 ॥

गुरु-दण्ड को, भाग्य मानना।
भाव; ऋषि का, भव-सुधारना॥ 100 ॥

ऋषि का जीवन, आर्जव-गुरु से।
सेवा, भक्ति, रही शुरू से॥ 101 ॥

ऋषियों का मन, गुरु-समर्पित।
शिव-पथ चलने, प्रतिपल-अर्पित॥ 102 ॥

आर्जव-गुरु की, शरण साथ हो।
ऋषि-जन लक्ष्य है, मोक्ष प्राप्त हो॥ 103 ॥

ऋषि का गुरु से, सच्चा-रिश्ता।
लक्ष्य-प्राप्ति का बने फरिश्ता॥ 104 ॥

आर्जव-गुरु संग चरित महकता।
ऋषि-जन का शुभ भाग्य-चमकता॥ 105 ॥

गुरु का जीवन, प्रभु-सम बनता।
ऋषि का जीवन गुरु में ढलता॥ 106 ॥

गुरु-उपदेश, भविक को भाता।
त्याग ऋषि का जगत सुहाता॥ 107 ॥

आर्जव–गुरु का, निर्मल जीवन।
पुनीत बनता, **ऋषिका** तन–मन॥ 108 ॥

गुरुवर भव से पार लगा दो।
ऋषिका जीवन, सफल बना दो॥ 109 ॥

•••

नेक रहूँ आगे बढ़ूँ, दे दो गुरु वरदान।
जीवन उत्तम बन सके, करूँ धर्म शुभ काम॥ 110 ॥

•••

समदर्शन, व्रत ज्ञान का, दिया आपने दान।
ऋणी रहूँ बस आपका, शत शत बार प्रणाम॥ 111 ॥

दिसम्बर 2024 पिड़ावा (राज.)

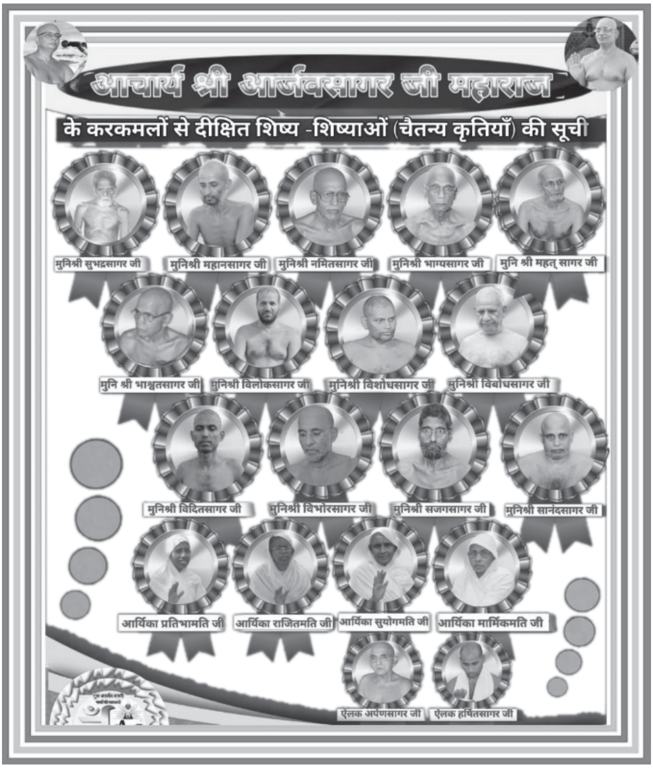

गुरु-उपकार-शतक

-बहिन ऋषिका जैन, दमोह
बी.ई., एम.ए., पी.एच.डी. (संलग्न)

ऋषि का पथ करुणा का सार।
त्याग-तपस्या का विस्तार ॥ 1 ॥

ऋषि से जीवन धन्य बने।
संयम-पथ पर नित्य चले ॥ 2 ॥

ऋषि की वाणी अमृतधार।
शांत करे वह मनोविकार ॥ 3 ॥

ऋषियों का वह उत्तम ध्यान।
सबको भाता आठों याम ॥ 4 ॥

ऋषि का जीवन सरल महान।
तप व त्याग से हो पहचान ॥ 5 ॥

ऋषि कहते; न जीव सताओ।
जीवन में तुम करुणा लाओ ॥ 6 ॥

ऋषि पथ पर जो चलता जाये।
कर्मों से वह मुक्ति पाये ॥ 7 ॥

ऋषि दृष्टि में समता भाव।
ऊँच-नीच का नहीं स्वभाव ॥ 8 ॥

ऋषि करते हैं मौन साधना।
मोक्ष चाह; न कोई कामना ॥ 9 ॥

ऋषि साधना आत्म विकास।
निज जीवन में धर्म प्रकाश ॥ 10 ॥

ऋषियों ने है दया को सींचा।
हिंसा-को समझा था नीचा ॥ 11 ॥

ऋषि ज्ञान का दीप जलाते।
चारित बगिया नित महकाते ॥ 12 ॥

गुरु का जीवन, तारणहार।
देते संयम का उपहार ॥ 13 ॥

गुरु ने सम-दर्शन सिखलाया।
मिथ्या भ्रम को दूर भगाया ॥ 14 ॥

ऋषि का लक्ष्य; मोक्ष प्रधान।
दर्शन-ज्ञान-चरित्र सोपान ॥ 15 ॥

ऋषि-गुरु ने निज को पहचाना।
मात्र देह को साधन माना ॥ 16 ॥

गुरु ने जीव-अजीव बताया।
तत्त्व ज्ञान का पाठ पढ़ाया ॥ 17 ॥

गुरु की दृष्टि समभावी है।
मोक्षमार्ग की अनुरागी है ॥ 18 ॥

ऋषि ने संयम वन महकाया।
अंतर्मन को शुद्ध बनाया ॥ 19 ॥

मुनि जीवन में क्षमा धारते।
भवोदधि से हमें तारते ॥ 20 ॥

मुनियों का तप बनता सेतु।
भवसागर का तारण हेतु ॥ 21 ॥

गुरु कहते-मिथ्यातम छोड़ो।
सम-दर्शन से नाता जोड़ो ॥ 22 ॥

मुनि का जीवन सरल शुद्ध है।
ज्ञान ध्यान तप आत्मबुद्ध है ॥ 23 ॥

मुनियों का है हृदय विशाल।
मूलगुणों की रखते ढाल ॥ 24 ॥

ऋषि का जीवन दीप समान।
जग को देता सम्यग्ज्ञान॥25॥

ऋषिवर जीवन सौम्य सरीफ।
संयम तप का उज्जवल दीप॥ 26॥

ऋषि का पथ है शांत विशाल।
कोई राग न कोई जाल॥27॥

ऋषि की वाणी हरे वेदना।
सुख–दुःख में भी हर्ष–खेद न॥ 28॥

ऋषियों के है मौन में शक्ति।
पल–पल बढ़ती आतम भक्ति॥29॥

ऋषि साधना है निष्काम।
फल आशा से रहे विराम॥ 30॥

ऋषि का जीवन अनुकरणीय।
तीर्थंकर सम है रमणीय॥31॥

ऋषि दिखाते मोक्ष की राह।
सुख साधन की न है चाह॥ 32॥

ऋषि ने संयम पथ दिखलाया।
अनुशासन भी है सिखलाया॥33॥

ऋषि जीवन है शांति प्रदायी।
कर्म काट फिर शिव सुख दायी॥34॥

ऋषि जीवन को ग्रंथ बनाओ।
खूब पढ़ो, समता उर लाओ॥35॥

ऋषि सेवा में पुण्य अपार।
सेवा कर भवि, हो भव पार॥ 36॥

ऋषि; जीवन में धैर्य बढ़ाते।
सहनशीलता भी सिखलाते॥37॥

ऋषि चरणों में शिष्य समर्पित।
मम जीवन भी गुरु समर्पित ॥ 38 ॥

ऋषि वचनों का मूल्य है उत्तम।
गुरुवाणी शुभमय सर्वोत्तम ॥ 39 ॥

ऋषि को मिलते गुरु चरण।
शिव मंजिल तक वही शरण ॥ 40 ॥

ऋषि ने आर्जव गुरु को पाया।
जीवन बगिया को महकाया ॥ 41 ॥

ऋषि ने मन से अहं हटाया।
विनय का सुंदर पाठ पढ़ाया ॥ 42 ॥

ऋषि ने समय का मोल बताया।
नियम त्याग का मूल्य सिखाया ॥ 43 ॥

ऋषि का सान्निध्य है सर्वोत्तम।
कार्य सफल भी होते उत्तम ॥ 44 ॥

ऋषि ने मम वैराग्य जगाया।
मोक्ष-मार्ग में मुझे बढ़ाया ॥ 45 ॥

ऋषि; जीवन के तारणहार।
भव्य जीव हों भव से पार ॥ 46 ॥

ऋषि जीवन पापों का त्यागी।
मोक्ष मार्ग का है अनुरागी ॥ 47 ॥

ऋषि ने साहस वहीं जगाया।
जहाँ हो शंका, भय का साया ॥ 48 ॥

ऋषि ने जीवन अर्थ बताया।
जैन धर्म का मार्ग सिखाया ॥ 49 ॥

ऋषि जीवन आदर्श अमर।
युग–युग तक वह रहे प्रखर॥ 50॥

गुरु शिष्य को ऋषि बनाते।
ध्यान साधना सभी सिखाते॥ 51॥

ऋषि समता का सूत्र सिखाते।
राग द्वेष से हमें बचाते॥ 52॥

ऋषि आचरण हैं सिखलाते।
कर्म बंध से हमें बचाते॥ 53॥

ऋषि से धर्म ध्वजा लहराये।
जैन धर्म की शान बढ़ाये॥ 54॥

ऋषिवर तप का अर्थ बताते।
सहज साधना हमें कराते॥ 55॥

ऋषि समर्पण भाव सिखाते।
साधक को हैं सजग बनाते॥ 56॥

ऋषि; गुरुवाणी को बरसाते।
व्रत, संयम, शुचिता अपनाते॥ 57॥

ऋषि का जीवन शुभमय जान।
व्रत, संयम, रत्नों की खान॥ 58॥

ऋषि के पथ पर चलते जाओ।
अजर अमर पद को तुम पाओ॥ 59॥

ऋषि आशी में अद्भुत शक्ति।
करते हर पल प्रभु की भक्ति॥ 60॥

ऋषि की चर्या लगती प्यारी।
जग जीवों की है हितकारी॥ 61॥

ऋषि पाप में मौन धारते।
भवोदधि से तिरें, तारते॥ 62॥

ऋषि वाणी में शांति बसती।
श्रवण करें तो भव दुःख हरती॥63॥

ऋषिवर करुणाकर रत्नाकर।
ज्ञान-ध्यान के बड़े प्रभाकर॥ 64॥

ऋषि सरलता की पहचान।
गुरु दर्शन से होता ज्ञान॥65॥

ऋषि धर्म के मूलाधार।
न ऋषि हों, न भव से पार॥ 66॥

ऋषि-गुरु की है महिमा न्यारी।
दर्शन उनका है सुखकारी॥67॥

ऋषि करुणा की परिभाषा हैं।
भक्तों की शुभ अभिलाषा हैं॥ 68॥

ऋषि ज्ञान का अक्षय कोश।
ऋषि बढ़ाते तप में जोश॥69॥

ऋषि साधना का निष्कर्ष।
निज में ही हो शुभ उत्कर्ष॥ 70॥

गुरु आर्जवसागर की छाया।
तीर्थंकर सम जिनकी काया॥71॥

ऋषि आशीष में शक्ति होती।
मन के संशय सारे खोती॥ 72॥

ऋषियों का नित कर गुणगान।
जीवन सबका बने महान॥73॥

ऋषि में दिखती छवि प्रभुवर की।
आभा जिनकी सूर्य प्रखर सी ॥ 74 ॥

ऋषि कृपा दृष्टि भवि पड़ती।
शरण ऋषि, भव दुःख को हरती ॥ 75 ॥

गुरुओं के शुभ चरण पूज्य हैं।
ऋषि जन के वे परम पूज्य हैं ॥ 76 ॥

ऋषि का जग में होता नाम।
जिनशासन का स्वाभिमान ॥ 77 ॥

ऋषि लेखनी दुःख को हरती।
धर्म भावना जग में भरती ॥ 78 ॥

ऋषि काव्य शुभ बने साधना।
शब्द-शब्द में हैं आराधना ॥ 79 ॥

गुरु वैराग्य का बीज हैं बोते।
ऋषि की जीवन नैया खेते ॥ 80 ॥

ऋषि सत्य का मार्ग दिखाते।
जीवन नौका पार लगाते ॥ 81 ॥

ऋषि श्रद्धा की डोर थमाएँ।
भटके मन को राह दिखाएँ ॥ 82 ॥

ऋषि संयम की भाषा बोलें।
अंतर पट के ताले खोलें ॥ 83 ॥

ऋषियों सम समता को पाऊँ।
गुरुओं के गुणगान को गाऊँ ॥ 84 ॥

ऋषि जीवन का अर्थ बताएँ।
जन्म-मरण का भेद मिटाएँ ॥ 85 ॥

गुरु दर्शन को दुर्लभ माना।
मिल जाये तो धन्य ठिकाना॥ 86॥

गुरु की उज्जवल शुभमय ज्योति।
दूर दृष्टि है गुरु की होती॥87॥

गुरु समय का मूल्य बताते।
सदुपयोग करना सिखलाते॥ 88॥

गुरुओं की शुभ कृपा निराली।
पर्व यही है; यही दिवाली॥89॥

गुरुवर नाम है जग में छाया।
आर्जवसागर सबने ध्याया॥ 90॥

गुरु विद्यासागर से दीक्षा।
सार्थक कर दी आगम शिक्षा॥91॥

गुरुवर सम न कोई लगता।
दर्शन से मिथ्यातम भगता॥ 92॥

ऋषि ने गुरु का नाम बढ़ाया।
गुरु सम चर्या को अपनाया॥93॥

गुरुवर माँझी सम कहलाते।
मोक्षमार्ग में हमें बढ़ाते॥ 94॥

गुरुवर प्रभु से हमें मिलाते।
भक्त बना फिर मोक्ष दिलाते॥95॥

गुरु-मुख से शुभ वाणी खिरती।
भव्यों की वह पीड़ा हरती॥ 96॥

गुरुवर लगते वीर प्रभु सम।
गुरु गुण गाते जग के जन-जन॥97॥

7 गुरु वाणी से मिलता आगम।
पुण्य से मिलता गुरो समागम॥98॥

गुरु का रूप सभी को भाता।
प्रकृति नग्न दिगंबर गाता॥99॥

गुरुवर करते नित उपकार।
देते रत्नत्रय उपहार॥100॥

गुरु की करुणा शांति भरती।
दुखियों के सब दुःख को हरती॥101॥

गुरु प्रसन्नता से उत्साही।
होते, भविजन शिव के राही॥102॥

ऋषि आर्जवसागर को पाया।
विद्यासागर गुरु की छाया॥103॥

गुरुवर ने लिखना सिखलाया।
गुरु भक्ति से मिलन कराया॥104॥

गुरु आशी से संभव पाया।
काव्य में जो भी भाव समाया॥105 ॥

ऋषि ने भाषा शुद्ध बनाई।
कविता में जो अलख जगाई॥106॥

ऋषियों के शुभ सूत्र को गाएँ।
गुरु भक्ति में हम रम जाएँ॥107॥

‘**ऋषिका**’ लेखन गुरु भक्ति है।
गुरु भक्ति अद्भुत शक्ति है ॥ 108 ॥

जग ऊँचाईयाँ छू सकूँ, न हो कुछ अभिमान।
गुरो समर्पित उम्र हो, करूँ गुरु का नाम ॥ 109 ॥

रमें आत्म की भक्ति में, कर्म सभी कट जायें।
गुरुवर की शिवराह से, मोक्ष सुखी बन जायें ॥ 110 ॥

01-01-2026
पिड़ावा (राज.)

गुरु भक्ति में शक्ति होती है।
बढ़े पुण्य मुक्ति होती है ॥
वैयावृत्ति पुण्य बढ़ाये।
तीर्थंकर भी शीघ्र बनाये ॥
पूजा; पूज्य बना देती है।
वीतराग का पद देती है ॥
गुरु आज्ञा से जब चलते हैं।
सुख के निश-दिन दल खिलते हैं ॥
शिक्षा पाने मेहनत करना।
नहीं कठिन पथ से है डरना ॥
गुरु आशीष मिला है सबको।
धर्ममार्ग नित चलता हमको ॥

भावनाष्टक

ऋषि का जीवन धन्य बनायें।
ऋषि–सम चर्या में ढल जायें ॥ 1 ॥

ऋषि का जीवन सौख्य बनेगा।
शांति सौख्य को नित भर देगा ॥ 2 ॥

ऋषि की संयम सुरभि नित ही।
सद्‌गति देगी, करेगी हित ही ॥ 3 ॥

ऋषि के वच शुभ याद रहेंगे।
कभी न भूलो, यही कहेंगे ॥ 4 ॥

ऋषि रहे जब पाप भीरु हैं।
शिष्य बनेंगे पाप भीरु तहँ ॥ 5 ॥

ऋषियों सद्‌भावन होगी।
स्वर्ग, विदेह में दर्शन देगी ॥ 6 ॥

जिनवर पूजन शांति मयी है।
कर्म–निर्जरा खूब कही है ॥ 7 ॥

परमेष्ठी की भक्ति करेंगे।
पुण्य सातिशय, सिद्ध बनेंगे ॥ 8 ॥

बही पार्श्वनाथ, मंदसौर
18 दिसम्बर 2026

सिद्धाष्टक

–आचार्य श्री आर्जवसागर जी

1. अष्ट–गुणों से युक्त जो, बने सिद्ध हैं नाथ।
अष्ट–कर्म से हैं रहित, झुकते, नमते माथ॥

2. मोह–कर्म को नाशकर, पाया समकित पूर्ण।
ज्ञानावरणी को हटा, केवलज्ञान सुपूर्ण॥

3. दर्शनावरण कर विलय, केवलज्ञान सु पाय।
अन्तराय का नाश कर, अनंतवीर्य उपजाय॥

4. नामकर्म के नाश से, सूक्ष्म गुणी भगवान।
आयु–कर्म का क्षय हुआ, अवगाहन पहचान॥

5. गोत्र–कर्म को काटकर, अगुरुलघु गुण जान।
वेदनीय को नष्ट कर, अव्यावधी मान॥

6. तप से नय से सिद्ध हो, संयम चारित्र सिद्ध।
दर्शन–ज्ञान विशुद्ध हो, हो सर्वज्ञ प्रसिद्ध॥

7 ऊर्ध्व–लोक में वास हो, सिद्ध शिला है थान।
वातवलय है अन्त में, न अलोक प्रस्थान॥

8. धर्म द्रव्य भी हेतु था, आप गमन के साथ।
'आर्जव' गति से आपने, पाया है परमार्थ॥

3 मार्च 2026 तारंगा जी सिद्धक्षेत्र